वर्ष 44 अंक 8 अगस्त 2017

₹ 15/-

हँसती दुनिया

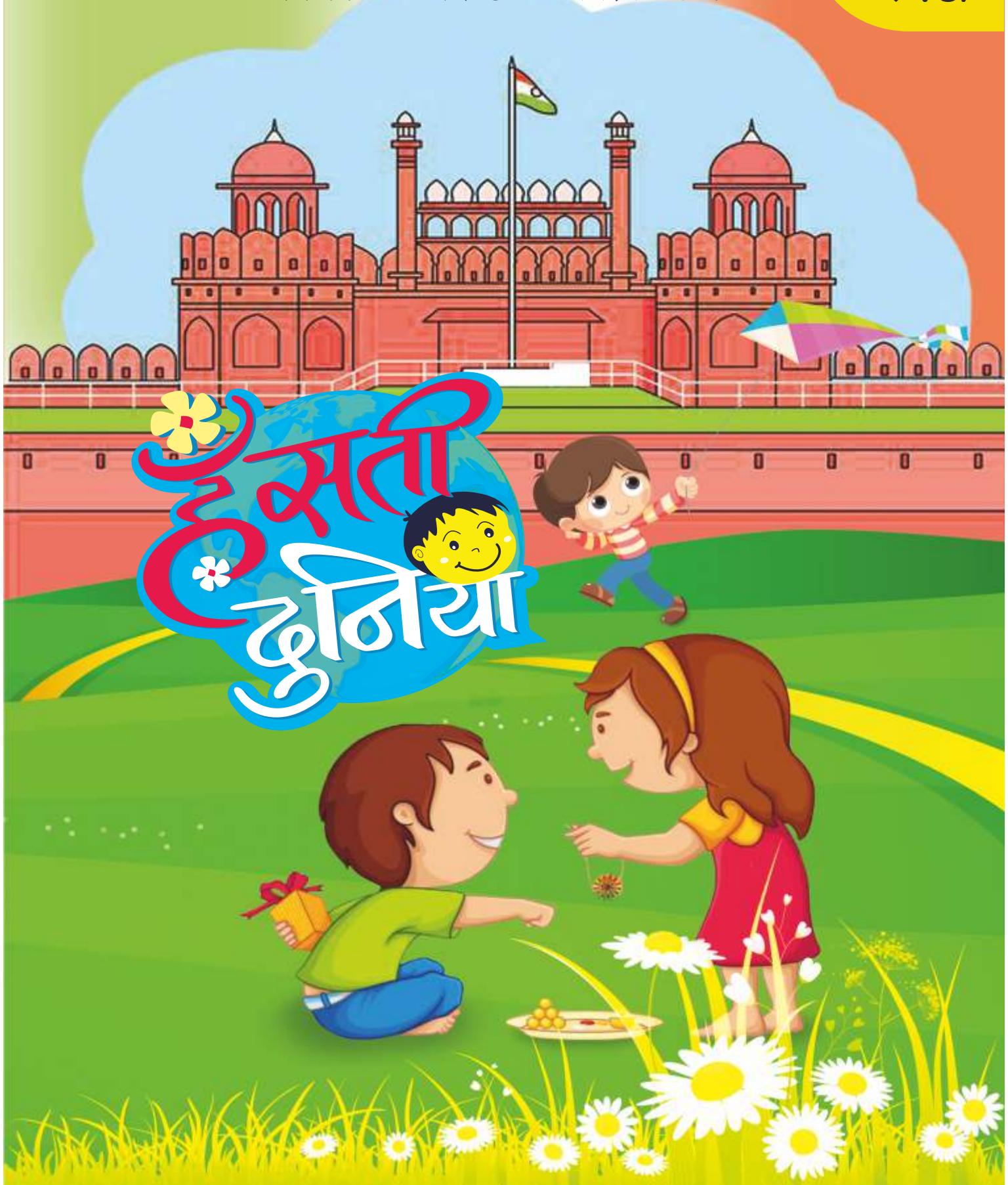

हँसती दुनिया

● वर्ष 44 ● अंक 08 ● अगस्त 2017 ● पृष्ठ 52

बच्चों के बौद्धिक विकास की अनूठी पत्रिका

(पंजाबी, अंग्रेजी व मराठी में भी प्रकाशित)

सी. एल. गुलाटी, प्रभारी पत्रिका विभाग

प्रकाशक एवं मुद्रक राधेश्याम ने सन्त निरंकारी मण्डल, दिल्ली–9 हेतु एम.पी. प्रिंटर्स बी–220 फेस–II, नोएडा–201 305 (उ.प्र.) से मुद्रित करवाकर सन्त निरंकारी सत्संग भवन, सन्त निरंकारी कालोनी, दिल्ली–09 से प्रकाशित किया।

मुख्य सम्पादक : हरजीत निषाद

सम्पादक
विमलेश आहूजा

सहायक सम्पादक
सुभाष चन्द्र

Ph.: 011-47660200
Fax: 01127608215
Email: editorial@nirankari.org
Website: http//www.nirankari.org
kids.nirankari.org

Subscription Value

	India/ Nepal	UK	Europe	USA	Canada/ Australia
Annual	Rs.150	£15	€ 20	$25	$30
5 Years	Rs.700	£70	€ 95	$120	$140

Other Countries

Equivalent to U·S· Dollars as mentioned above.

स्तम्भ

4. सबसे पहले
5. सम्पूर्ण अवतार बाणी
11. समाचार
18. पहेलियां
20. वर्ग पहेली
44. पढ़ो और हँसो
49. रंग भरो
50. आपके पत्र मिले

चित्रकथाएं

12. दादा जी
34. किट्टी

मुखपृष्ठ : निरंकारी आर्टग्रुप

कहानियां

9. लालच बुरी बला है
: ऊषा सभरवाल

10. वर्षा की एक बूंद
: महेन्द्र सिंह शेखावत

16. पर्यावरण और वृक्ष
: अंकुश्री

21. बहादुरी का पुरस्कार
: राजकुमार जैन 'राजन'

26. कर्म ही जीवन का...
: सीताराम गुप्ता

32. किताब के पन्ने
: विपिन कुमार

40. छोड़ दो मुझे...
: दिनेश दर्पण

कविताएं

8. स्वाधीनता का दिन
: गफूर 'स्नेही'

19. समय सुबह का
: घमण्डीलाल अग्रवाल

25. गिलहरी
: मदन देवड़ा

25. बिना टिकट ...
: मदन देवड़ा

38. दो बाल कविताएं
: हरजीत निषाद

46. तारों का राजा
: प्रियंका भारद्वाज

46. हरियाली का मौसम...
: हरजीत निषाद

47. प्यारा भारत
: डॉ. परशुराम शुक्ल

विशेष / लेख

6. निरंकारी राजमाता जी के अनमोल वचन

7. बाबा अवतार सिंह महाराज के अनमोल वचन

24. 'जामुन' गुलाबजामुन से अधिक फायदेमंद
: विभा वर्मा

28. विज्ञान प्रश्नोत्तरी
: घमण्डीलाल अग्रवाल

29. गुजरात का राजकीय पशु : सिंह
: डॉ. परशुराम शुक्ल

39. अब स्टार ट्राम कराएगी परीलोक की यात्रा
: कमल जैन

42. जिसने आंखें खोली...
: पुष्पेश कुमार पुष्प

43. दर्जिन चिड़िया
: किरण बाला

अद्भुत-प्रयोग

शिक्षक और छात्र का रिश्ता बहुत महत्वपूर्ण है। शिक्षक छात्रों की शिक्षा सम्बन्धी जानकारियां तो बढ़ाते ही हैं साथ ही साथ उन्हें व्यावहारिक जीवन की अच्छाईयां भी प्रदान करते हैं।

शिक्षक को रोज कक्षा में आना होता है। उन्हें रोज छात्रों को पढ़ाना होता है। कक्षा में प्रायः छात्र अध्यापक से दूसरे छात्रों की शिकायत भी करते रहते हैं कि फलां छात्र अभद्र व्यवहार करता है या फलां छात्र लायक नहीं है या वह छात्र बहुत शरारती है आदि। एक अध्यापक ऐसी ही शिकायतें सुन–सुनकर परेशान हो गया। एक दिन अध्यापक को एक उपाय सूझा। उसने छात्रों से कहा– ''मैं आज आप सबको एक–एक पेपर देता हूँ। इसमें आप सबने अपनी कक्षा के सबसे नालायक और शरारती विद्यार्थियों की सूची बनानी है। इस समय कक्षा में बीस विद्यार्थी मौजूद हैं।''

विद्यार्थियों को जो भी विद्यार्थी ठीक नहीं लगे, उनका नाम पेपर पर लिख दिया और अपनी–अपनी सूची अध्यापक जी को दे दी।

अध्यापक ने हर विद्यार्थी की सूची को ध्यान से पढ़ा और बाकी के विद्यार्थियों से उसकी तुलना की। अध्यापक के इस प्रयोग से एक बहुत ही आश्चर्यजनक तथ्य का पर्दाफाश हुआ कि किसी एक विद्यार्थी ने कक्षा के 20 में से 18 सहपाठियों का नाम सूची में लिखा था कि– वे ठीक नहीं हैं परन्तु जिन 18 विद्यार्थियों का नाम उसमें लिखा, उन सभी 18 विद्यार्थियों ने भी अपनी–अपनी सूची में उनका नाम लिखा था कि वे ठीक नहीं हैं, जबकि एक विद्यार्थी ने खाली पेपर ही अध्यापक को दिया जिसमें उसने किसी का भी नाम नहीं लिखा था। यह तथ्य भी सामने आया कि जिस विद्यार्थी ने अपने पेपर में किसी का भी नाम नहीं लिखा था अन्य विद्यार्थियों ने भी उसका नाम अपनी सूची में भी नहीं लिखा था कि– वह ठीक नहीं है।

अब अध्यापक ने इन तथ्यों को सामने रखकर बच्चों को समझाना आरम्भ किया– हम जिस किसी से भी मिलते हैं और उनसे जैसा भी व्यवहार करते हैं, वह हमारा ही प्रतिबिम्ब होता है। अगर स्वयं में बुराई हो तो दूसरे में भी बुराई ही दिखाई देती है। हम ईमानदार नहीं होते तो दूसरा भी हमें बेईमान ही लगता है। अगर हमारे मन में लालच है तो दूसरा भी हमेशा हमें लालची ही दिखाई देने लगता है। और तो और वह हमें अवगुणों का भंडार–सा लगता है और हमारी अपने द्वारा सोची हुई कल्पना अपने–आप को शुद्ध और सुन्दर दिखाई देने लगती है।

अब देखना यह है कि अगर हमें दूसरे में अवगुण दिखाई दे भी रहे हैं तो वह हमारा ही प्रतिबिम्ब है और हम ही उसके निवारण की प्रतिज्ञा करें, भले ही वह छोटे रूप में ही क्यों न हो। यह कार्य हमें स्वयं ही करना होगा। एक व्यक्ति जो गलत है, उसकी गलती को उदाहरण बनाकर, स्वयं वही गलती करने से मैं अपने आपका सुधार नहीं कर सकता। हाँ उसको दर्पण बनाकर, अपने दामन पर कोई दाग न लगे, ऐसा अवसर मैं अवश्य बना सकता हूँ।

दूसरों के रूप में हम स्वयं अपने को देखना आरम्भ करें क्योंकि अगर दर्पण नहीं होगा तो हम अपने आपको न तो देख पाएंगे और न अपना सुधार कर पाएंगे। इससे स्पष्ट है कि हर व्यक्ति, हर वातावरण, हर स्थिति–परिस्थिति, हर सुख–दुख हमारे स्वयं के होने का ही दर्पण है।

– विमलेश आहूजा

सम्पूर्ण अवतार बाणी

पद संख्या : 155

जेहड़ा वाली सारे जग दा करदा जो रखवाली ए।
जिस दे मन विच प्यार नहीं एहदा सोच समझ तों खाली ए।
ऋद्धियां सिद्धियां ते नौ निधियां जिस सेवा तों पांदा ए।
माया पिच्छे लग के प्राणी उसनूं भुलदा जांदा ए।
घट घट अंदर वास है जिस दा हर दम हाज़र नाज़र ए।
ख़लकत सारी भुल्ली बैठी केहड़ा इस दा कादर ए।
जिसदी बख्शिश नाल असानूं कुल दुनियां विच माण मिले।
अन्तकाल जो होवे साथी दरगाहीं जो आण मिले।
सभे लोकीं भुल के एहनूं ऐवें समां गुज़ार रहे।
कहे अवतार करे गुर किरपा तां एह याद मुरार रहे।

भावार्थ : उपरोक्त पद में बाबा अवतार सिंह जी बता रहे हैं कि ये प्रभु–परमात्मा इस सारे संसार का मालिक है, जो इस सारे संसार की रखवाली करता है। ऐसे प्रभु के लिए जिसके मन में प्यार नहीं है, वह इन्सान सोच–समझ से खाली है। इन्सान संसार की तमाम धन–सम्पदाएं, ऋद्धियां–सिद्धियां, नौ निधियां आदि इस प्रभु की सेवा से प्राप्त करता है परन्तु संसार की रंग–बिरंगी माया के पीछे लगकर इन्सान उस प्रभु को ही भूल जाता है।

बाबा अवतार सिंह जी संसार के मानव की नादानियों का जिक्र करते हुए बता रहे हैं कि जिस प्रभु का हर घट (शरीर) में वास है और जो हमेशा हाज़िर–नाज़िर अर्थात् सामने मौजूद है, सब कुछ देखने–करने वाला है ऐसे प्रभु को संसार का मानव भूला हुआ है।

विडम्बना यह है कि मानव यह भी नहीं जान पा रहा है कि कौन कादर अर्थात् परम समर्थ और सर्व–शक्तिमान है। नादान मानव यह भी नहीं जान पाता कि सद्गुरु की कृपा से ही हमें सारी दुनिया में मान–सम्मान प्राप्त होता है और यही दयालु जो अन्तकाल अर्थात् मृत्यु के समय परमात्मा की दरगाह में हमारा रक्षक बनकर उपस्थित होता है। संसार के लोग इस प्रभु–परमात्मा को भूलकर व्यर्थ ही अपना समय गंवा रहे हैं।

बाबा अवतार सिंह जी यह भी स्पष्ट कर रहे हैं कि जिस इन्सान पर सद्गुरु की कृपा होती है उसे ही यह परमात्मा याद रहता है।

निरंकारी राजमाता जी के अनमोल वचन

- ★ सत्य केवल परमात्मा ही है।
- ★ सदा सज्जनों की संगति करो।
- ★ क्रोध मनुष्य को पशु बना देता है।
- ★ ईश्वर और मनुष्य के बीच की कड़ी सद्गुरु है।
- ★ आपस में मिल–बैठना, इन्सानों वाले कर्म करना, धर्म का पहला लक्षण है।
- ★ सत्संग बड़े भाग्य से मिलता है। सत्संग का अर्थ होता है सत् का संग अर्थात् ईश्वर का संग।
- ★ सन्तों की संगत से ही ब्रह्म की प्राप्ति होती है।
- ★ मानवता की माला प्रभु–परमात्मा रूपी धागे के बिना असम्भव है।
- ★ जब दिल उदास हो, उस समय यदि सुमिरण शुरू हो जाये तो मन पर पड़ा बोझ हट जाता है। राहत मिल जाती है।
- ★ मन को सुख और आनन्द और कहीं नहीं बल्कि सद्गुरु के चरणों में ही प्राप्त होता है।
- ★ एक दूसरे के सुख–दुःख में काम आना ही इन्सानों वाला कर्म है।
- ★ जिस दिल में भक्ति बस जाती है वह दिल विशाल हो जाता है।
- ★ हाथों का इस्तेमाल दूसरों के आंसू पोंछने के लिए करें उन्हें आंसू देने के लिए नहीं।
- ★ सन्तों की कृपादृष्टि भाग्य तक बदल देती है।
- ★ सन्त की पूजा, सन्त की सेवा ही भक्ति की पहली सीढ़ी है।
- ★ सब्र, संतोष, प्यार से जीना ही असली जीना है।
- ★ सन्त हमेशा अपनी कमजोरियों की तरफ नज़र डालते हैं।
- ★ इच्छा, स्वार्थ की जिज्ञासा कभी नहीं बुझती, न वह पूरी तरह सन्तुष्ट हो पाती है।

–संग्रहकर्ता : रीटा

बाबा अवतार सिंह महाराज के अनमोल वचन

- ★ तन, मन, धन प्रभु की देन है। इसे प्रभु का ही समझो।
- ★ प्रभु ज्ञान द्वारा ही निरंकार को जाना जा सकता है।
- ★ सेवा हृदय और आत्मा को पवित्र करती है।
- ★ जहाँ ईश्वर की चर्चा होती है वहीं स्वर्ग होता है।
- ★ भक्त की पहली पहचान उसकी नम्रता है।
- ★ सद्गुरु ही ईश्वर तक पहुँचने का मार्ग बतलाते हैं।
- ★ सत्संग करने से अज्ञान का नाश होता है।
- ★ दया की नींव को निकालकर ईमारत टिक नहीं सकती।
- ★ किसी से ईर्ष्या नहीं करनी बल्कि सभी से प्यार करना चाहिए।
- ★ मन को साफ करने से ही संसार में सुख आ सकता है।
- ★ अपने अवगुणों को ध्यान में रखकर ही जीवन को ऊँचा उठा सकते हैं।
- ★ सच्चा धर्म इन्सानियत है इन्सानियत मिटाकर कोई धर्म बचाया नहीं जा सकता।
- ★ निरन्तर सत्संग करने वाला जीवन के ऊँच–नीच, सुख–दुःख में भी एकरस रहता है।
- ★ क्रोध इन्सान को सदा ही पतन की ओर ले जाता है।
- ★ सदैव सुख देने वाला साधन परमात्मा के नाम (सुमिरण) को ही माना गया है।
- ★ सारे संसार का वैभव प्राप्त करने के बावजूद भी कोई सन्तोष नहीं खरीद सकता है।
- ★ विवेक और बुद्धि सत्य का संग करने से ही प्राप्त होते हैं।
- ★ भक्त सदैव सत्य की शिक्षा ही हृदय में धारण करते हैं।

–संग्रहकर्ता : श्रीराम प्रजापति

राष्ट्रीय बालगीत : गफूर 'स्नेही'

स्वाधीनता का दिन

स्वाधीनता का दिन पावन,
आओ गाएं जन गण मन।
जयहिंद जय जय गान,
अमर रहे ये हिन्दुस्तान।।

न जाति न मजहब,
एक भारतीय हम सब।
एकता से जाए सबल बन,
स्वाधीनता का दिन पावन।।

उत्तर दक्षिण एक हैं,
पूरब पश्चिम नेक हैं।
मध्य शरीर में है धड़कन,
स्वाधीनता का दिन पावन।।

साथ चले गाते तराने,
निर्बल न कोई जाने।
शक्ति शांति का प्रण,
स्वाधीनता का दिन पावन।।

शहीदों को सलाम है,
इतिहास में पैगाम है।
फूट में एकता है निवारण,
स्वाधीनता का दिन पावन।।

गाँधी नेहरू भगत सुभाष,
गौरवशाली इनसे इतिहास।
भविष्य है ज्योति स्वर्ण,
स्वाधीनता का दिन पावन।।

लोककथा : ऊषा सभरवाल

लालच बुरी बला है

एक लकड़हारा था। वह नदी के किनारे पेड़ पर चढ़कर लकड़ी काट रहा था। सहसा उसकी कुल्हाड़ी उसके हाथ से फिसलकर नदी में जा गिरी। कुल्हाड़ी हमेशा के लिए हाथ से निकल गई। यह सोचकर लकड़हारा अत्यन्त दुखी हुआ और रोने लगा। उसका रोना सुनकर नदी देवता को बड़ी दया आई। उसने लकड़हारे से सारी बात पूछी और तत्काल डुबकी लगाई और हाथ में सोने की कुल्हाड़ी लेकर पूछा– क्या ये तुम्हारी कुल्हाड़ी है?

लकड़हारे ने नम्रतापूर्वक कहा– महाशय! ये मेरी कुल्हाड़ी नहीं है।

जलदेवता ने नदी में फिर डुबकी लगाई और एक चांदी की कुल्हाड़ी लिए उसके सम्मुख आकर पूछा– क्या ये तुम्हारी कुल्हाड़ी है?

लकड़हारे ने उत्तर दिया– नहीं महाशय, ये भी मेरी कुल्हाड़ी नहीं है।

जलदेवता ने एक बार फिर डुबकी लगाई और लोहे की कुल्हाड़ी हाथ में लेकर पूछा– क्या ये तुम्हारी कुल्हाड़ी है?

अपनी कुल्हाड़ी देखकर लकड़हारा प्रसन्न हो गया। जी हाँ, महाशय यही मेरी कुल्हाड़ी है। यद्यपि इसे पाने की मुझे कोई आशा न थी पर आपकी कृपा से ये मुझे फिर मिल गई है। इसके लिए मैं आपका धन्यवाद करता हूँ।

जलदेवता ने लोहे की कुल्हाड़ी उसके हाथ में सौंप दी। उसके बाद वे बोले– 'तुम निर्लोभी, सच्चे तथा धर्मपरायण हो इसलिए मैं तुम्हारे ऊपर परम सन्तुष्ट हूँ।' इतना कहने के बाद जलदेवता सोने व चांदी की कुल्हाड़ियां उस लकड़हारे को पुरस्कार रूप में देकर अन्तर्ध्यान हो गये। लकड़हारा कुछ भी समझ नहीं पाया और अवाक् होकर देखता रहा। उसके बाद घर लौटकर उसने अपने परिवार व पड़ोसियों से सारी घटना बताई। सुनकर सभी विस्मय से अभिभूत हो गये।

लकड़हारे का अद्भुत वृतान्त सुनकर एक पड़ोसी को बड़ा लोभ हुआ। अगले दिन सुबह वह भी एक कुल्हाड़ी लेकर पेड़ काटने के लिए नदी के किनारे स्थित एक पेड़ पर जा चढ़ा।

उसने पेड़ की मोटी शाखा पर दो–चार वार किए और हाथ से कुल्हाड़ी फिसल जाने

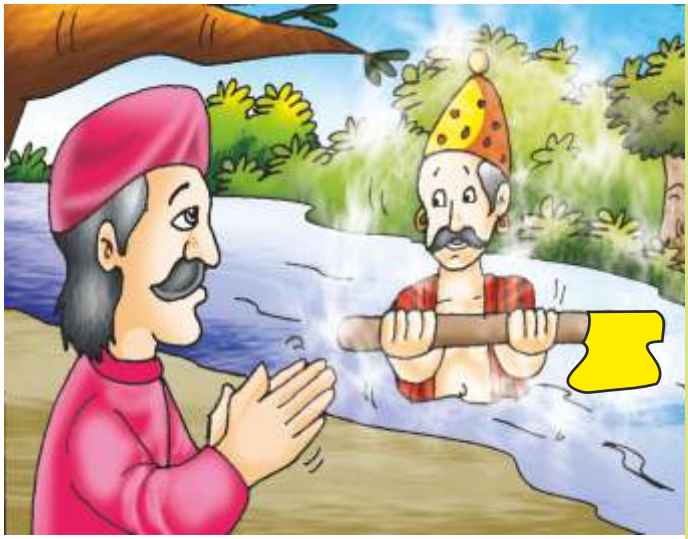

का अभिनय करते हुए उसने उसे नदी में डाल दिया। फिर वह जोर–जोर से रोने लगा। जलदेवता उसके सामने आए और उससे रोने का कारण पूछने लगे। वह सारी बातें बताकर खेद प्रकट करने लगा।

जलदेवता ने पिछली बार की तरह ही सोने की एक कुल्हाड़ी लेकर प्रकट हुए और उससे पूछा– क्या, यही तुम्हारी कुल्हाड़ी है?

सोने की कुल्हाड़ी देखते ही उसके मुँह से लार निकलने लगी और कहने लगा– जी हाँ यही मेरी कुल्हाड़ी है।

उसे ऐसा झूठा और फरेबी देखकर जलदेवता बहुत नाराज हुए और गुस्से में बोले– तू इसे पाने का अधिकारी नहीं है।– यह कहकर उस सोने की कुल्हाड़ी को नदी में फेंककर जलदेवता अन्तर्ध्यान हो गये।

सोने की कुल्हाड़ी के लालच में वह अपनी लोहे की कुल्हाड़ी से भी हाथ धो बैठा।

–किसी ने सच ही कहा है कि लालच बुरी बला है। पड़ोसी को उसकी करनी का उचित फल मिल गया।

बोधकथा : महेन्द्र सिंह शेखावत 'उत्साही'

वर्षा की एक बूंद

वह निराश बैठा था और बरसते हुए बादलों को देख रहा था। सहसा उसे लगा कि वर्षा की एक बूंद उससे कुछ कह रही है– ''तुम निराश क्यों बैठे हो?'' निराश बैठने से कभी अपनी मंजिल नहीं मिलती है। मंजिल तो मेहनत करने और निरन्तर आगे बढ़ने से मिलती है, उठो और आगे बढ़ो... और बढ़ते ही रहो, जिस प्रकार मैं बढ़ती हूँ मेरी तरह तुम भी गतिशील बनो, फिर देखो, एक न एक दिन तुम्हें अपनी मंजिल मिल ही जायेगी और तुम अपनी मंजिल को प्राप्त कर लोगे। तुम्हारा परिश्रम व्यर्थ नहीं जायेगा।

दो पल वह उस वर्षा की बूंद को देखता रहा, फिर देखते ही देखते वर्षा की वह बूंद आगे बढ़ते हुए उसकी आँखों से ओझल हो गई थी।

अगले ही पल वह उठ खड़ा हुआ और अपनी मंजिल की ओर बढ़ गया। वर्षा की एक बूंद ने उसके निराश जीवन में उत्साह और उमंग की नई किरण का संचार कर दिया था। अब वह निरन्तर आगे बढ़ता ही चला जा रहा था...।

वर्षा की एक बूंद ने अब उसके जीवन को बदल दिया था।

समाचार

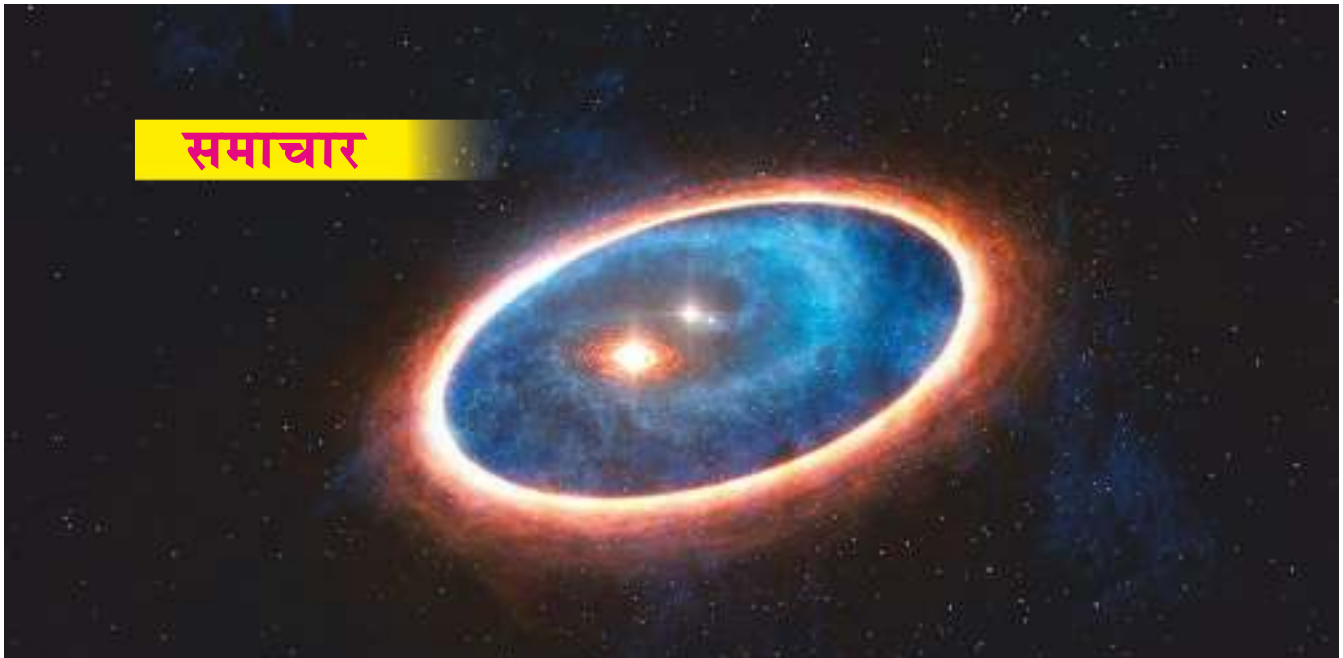

'वैम्पायर' तारे की प्रक्रिया कैमरे में कैद

नई दिल्ली। भारत की पहली समर्पित अंतरिक्ष वेधशाला 'एस्ट्रोसैट' ने छह अरब साल पुराने छोटे 'वैम्पायर' तारे द्वारा एक बड़े तारे का शिकार करने की प्रक्रिया को कैमरे में कैद किया है। वैज्ञानिकों का कहना है कि छोटा तारा जिसे 'ब्लू स्ट्रैगलर' भी कहा जाता है, वह अपने साथी तारे के द्रव्यमान और उसकी ऊर्जा को सोख लेता है। भारतीय खगोल भौतिकी संस्थान में प्रोफेसर अन्नपूर्णी सुब्रमण्यम ने कहा, ''सबसे लोकप्रिय व्याख्या यह है कि ये बाइनरी प्रणलियां हैं जिनमें एक छोटा तारा बड़े साथी तारे के द्रव्यमान को सोखकर बड़ा 'ब्लू स्ट्रैगलर' बन जाता है और इसलिए इसे वैम्पायर तारा भी कहते हैं।'' उन्होंने कहा, 'छोटा तारा पहले से अधिक बड़ा, गर्म और नीला बन जाता है जिससे वह कम आयु का प्रतीत होता है।' हालांकि ऐसा नहीं है कि ऐसी घटना के बारे में पहली बार सुना गया हो, लेकिन टेलीस्कोप के जरिए पूरी प्रक्रिया ऐसी जानकारी मुहैया कराएगी जो 'ब्लू स्ट्रैगलर' तारों के बनने के अध्ययन में वैज्ञानिकों की मदद करेगी।

यह एस्ट्रोसैट पर टेलीस्कोप की क्षमताओं को रेखांकित करता है। समर्पित अंतरिक्ष वेधशाला उपग्रह एस्ट्रोसैट का प्रक्षेपण सितम्बर 2015 में किया गया था। इस अध्ययन को एएआई, आईयूसीएए, टीआईएफआर, इसरो और कनाडियन स्पेस एजेंसी (सीएसए) के वैज्ञानिकों के दल ने एस्ट्रोफिजिकल जर्नल लेटर्स में हाल में प्रकाशित किया है। वैज्ञानिक अब उच्च रेजोल्यूशन वाली स्पैक्ट्रोस्कोपी के जरिए 'ब्लू स्ट्रैगलर' की रासायनिक संरचना को समझ रहे हैं जिससे इन विशेष आकाशीय पिंडों के विकास के बारे में और जानकारी मिल पाएगी। (भाषा)

संग्रहकर्ता : बबलू कुमार

दादा जी

चित्रांकन एवं लेखन
-अजय कालड़ा

सुखदेव का व्यवहार देखकर गाँव वालों ने उसे शेरसिंह से दूर रहने को कहा।
सुखदेव बोला कोई बात नहीं एक न एक दिन मैं उसको सही रास्ते पर ले आऊंगा।
शेरसिंह को यह बात पता चलते ही उसने सुखदेव को परेशान करने की ठानी और उसने सुखदेव के खेतों में अपने बैल छोड़ दिये ताकि फ़सल खराब हो जाए।

सुखदेव ने बैलो को बाहर निकाल दिया और शेरसिंह को कुछ नहीं कहा।
फिर एक दिन शेरसिंह बैलगाड़ी में अनाज भरकर शहर की ओर जा रहा था कि अचानक बरसात आ गई।
बैलगाड़ी एक नाले में फँस गई। बहुत प्रयास करने पर भी गाड़ी नहीं निकली और कोई गाँव वाला भी शेरसिंह की मदद नहीं कर रहा था।

परन्तु सुखदेव ने बहुत मेहनत से बैलगाड़ी निकलवाने में शेरसिंह की मदद की।
सुखदेव के व्यवहार से शेरसिंह का घमण्ड चूर-चूर हो गया। उसने अपने किए की माफी मांगी और उसने सुखदेव को गले लगाया।
अब शेरसिंह सबसे हिलमिल कर रहने लगा, सबके साथ प्रेम से रहने लगा।
भलाई, सद्व्यवहार और नम्रता से पत्थरदिल को भी पिघलाया जा सकता है।

बाल निबंध : अंकुश्री

पर्यावरण और वृक्ष

वृक्ष पर्यावरण की एक महत्वपूर्ण इकाई है। यह मनुष्य के लिये अति हितकारी है। इसलिये प्राचीन काल से ऋषि–मुनियों द्वारा वृक्षों को संरक्षण प्रदान किया गया है। इसके लिये कुछ वृक्षों की पूजा की परम्परा भी बनायी गयी है। वृक्षों से वन, वन्यप्राणी, पहाड़, नदी, समुद्र, आकाश, हवा, पानी आदि सभी पर प्रभाव पड़ता है।

यहाँ एक बात समझना बहुत आवश्यक है कि वन और वृक्ष में अंतर है। वन एक प्राकृतिक पद्धति है; जबकि वृक्ष एक इकाई है। वन के अंदर वृक्ष के अलावा झाड़ी, लता, घास, जानवर, पक्षी, नदी, नाला, पहाड़ आदि संपूर्ण प्राकृतिक संरचना रहती है या रह सकती है। वृक्ष पर पक्षियों का बसेरा हो सकता है। उस पर कुछ जानवर रह सकते हैं। वृक्ष कहीं भी लगाया जा सकता है इसलिये वृक्ष का काफी महत्व है।

वृक्ष से जलावन मिलता है। चारा मिलता है। दातौन मिलता है। कुछ विशेष प्रकार के वृक्ष की पत्तियों से पत्तल और दोना बनाये जाते हैं। कुछ वृक्षों से औषधि मिलती है। अनेक वृक्षों से फल मिलते हैं। कुछ वृक्षों से उपयोगी फूल और बीज भी मिलते हैं। महुआ और कचनार (कोयनार) उपयोगी फूल के और सखुआ, करंज, चिरौंची आदि उपयोगी बीज के उदाहारण हैं।

पर्यावरण की रक्षा में वृक्ष का उपयोग इतना ही नहीं है। कड़कती धूप में वृक्ष की छाया बड़ी उपयोगी होती है। कड़ी धूप में चलते हुए पथिक को वृक्ष की छांव की बेताबी से प्रतीक्षा रहती है। उनकी स्थिति 'होते वृक्ष तो मिलती छांव, पड़ गये छाले दुख गये पांव' की रहती है।

खेत में लगातार काम करने वाला किसान वृक्ष की छाया में थोड़ी देर विश्राम कर लेता है। कड़ी धूप में थकने के बाद वृक्ष की छांव में बैठने

से उसे नई ऊर्जा मिल जाती है। वर्षा की बौछार से बचने में भी वृक्ष मददगार होता है। इसकी हरियाली से आंखों को राहत मिलती है। मन हरा–भरा हो जाता है।

वृक्ष आकाश में घूमते मतवाले बादल को रोकते हैं। इससे वर्षा होती है। बारिश की तरह गरमी और ठंड का पड़ना भी मौसम के अनुसार जरूरी है। यह अच्छे पर्यावरण की पहचान है।

पहाड़ के ऊपर तरह–तरह के वृक्ष पाये जाते हैं। बिना वृक्ष का पहाड़ नंगा–सा दिखता है। वृक्ष की जड़ें पहाड़ के अंदर घुसकर चट्टानों को खिसकने से रोके रखती हैं। बिना वृक्ष के ये चट्टानें नीचे गिर कर टूट जाती हैं।

टूटी हुई चट्टानें वर्षा और बर्फ के पानी के साथ नीचे गिरती हैं। गिरते–गिरते उनके टुकड़े छोटे होते जाते हैं। वे टुकड़े बहकर नदियों में चले जाते हैं। पहाड़ की चट्टानें खिसकने से वहाँ की मिट्टी बहकर नीचे आती है। वह मिट्टी भी नदियों में पहुँचती है। चट्टान के टुकड़ों और मिट्टी के कारण नदियां भर जाती हैं। इससे उनकी जलधारक क्षमता कम हो जाती है। पानी मैदानी क्षेत्रों में फैल जाता है। परिणामतः बाढ़ का प्रकोप हो जाता है। भरी हुई नदियां बरसात खत्म होते सूखने लगती हैं। इस तरह वृक्ष बाढ़ और सूखे दोनों से बचाव करता है।

वृक्षों के अभाव में धरती की उपजाऊ मिट्टी बह जाती है। इसे भू–क्षरण कहते हैं। इससे धरती की उर्वरता खत्म हो जाती है। सतह भी पानी के बहाव के कारण उबर–खाबर हो जाती है। इससे बची हुई जमीन खेती लायक नहीं रह पाती।

मनुष्य या दूसरे जीव–जंतु सांस द्वारा कार्बन डाईआक्साइड गैस छोड़ते हैं। कल–कारखानों द्वारा भी तरह–तरह की गैसें छोड़ी जाती हैं। वृक्षों की हरी पत्तियां कार्बन डाईआक्साइड को आक्सीजन में बदल देती हैं। वृक्षों के कारण कार्बन डाईआक्साइड की मात्रा बढ़ने का असर समुद्र के तापमान पर पड़ता है। अत्यधिक कार्बन डाईआक्साइड से समुद्री जल खौलने लग सकता है। ऐसी स्थिति पर्यावरण के लिये अति घातक है। लेकिन वृक्ष पर्यावरण को इस घातक स्थिति में आने से रोकता है। वृक्ष के कारण आसपास का तापमान भी नियंत्रित रहता है।

पर्यावरण की रक्षा में वृक्ष की उपयोगिता को आर्थिक तौर पर भी आंका जा सकता है। कुछ वृक्षों की आयु हजारों वर्ष की होती है। लेकिन औसतन पचास वर्ष की आयु मानकर वृक्ष से मिलने वाले लाभ की गणना की जा सकती है। एक वृक्ष पचास वर्ष में पांच लाख रुपये का आक्सीजन देता है। वर्षा को सुनिश्चित और नमी को नियंत्रित कर यह छह लाख रुपये का लाभ पहुँचाता है। भू–क्षरण को रोककर और मिट्टी को उपजाऊ बनाकर एक वृक्ष पांच लाख रुपये का लाभ देता है। पर्यावरण की सबसे बड़ी प्रदूषण नियंत्रक इकाई वृक्ष है। इस रूप में यह दस लाख रुपये का लाभ पहुँचाता है। यह पशु–पक्षियों को छाया, विश्राम और भोजन देता है, जिसकी कीमत पांच लाख रुपये होती है। इस प्रकार अपनी औसत पचास वर्ष की आयु में एक वृक्ष कम से कम इकतीस लाख रुपये का पर्यावरणीय लाभ पहुँचाता है। इतने लाभकारी वृक्ष को लगाना और बचाना हम सबका कर्तव्य है।

प्रस्तुति : जगतार 'चमन'

पहेलियाँ

1. एक जुलाहन हमने देखी,
देती सबको मात।
बैठी रहती शिकार के लिए,
लगाकर घात।।

2. नित्य सुबह श्रृंगार करे,
धरती का वह दाता।
सर्दी में कुछ होता कमजोर,
गर्मी में गुस्सा दिखाता।।

3. सोने की वह चीज है,
पर बेचे नहीं सुनार।
मोल तो ज्यादा है नहीं,
पर सब करते उससे प्यार।।

4. नहीं मैं मिलता बाग में,
आधा फल हूँ और फूल।
काला हूँ पर मीठा हूँ,
खा के न पाया कोई भूल।।

5. सोने का पलंग नहीं,
न ही महल बनाए।
एक रुपया पास नहीं,
फिर भी राजा कहलाए।।

6. मेरे होते कई आकार,
फिर भी होते हैं पैर चार।
जो कोई भी आता है,
मुझमें आराम पाता है।।

7. जुबां नहीं फिर भी बोले,
बिन पैरों के सब जग डोले।
अमीर–गरीब सभी को भाता,
जब भी आता खुशियां लाता।।

8. एक गुफा में कई तिनके,
सबका मुँह है काला।
एक तिनका निकल भागे,
जग में करे उजाला।।

9. आदि कटे तो गीत सुनाऊं,
मध्य काट संत बन जाऊं।
अंत कटे तो साथी बन जाऊं,
सम्पूर्ण सबके मन को भाऊं।।

10. भूरा तन है रेखाएं तीन,
दाना खाती हाथ से बीन।

11. छोटा हूँ पर बड़ा कहलाता,
दही के तालाब में मैं नहाता।

12. कहलाता तो हूँ मैं चूल्हा,
पर अजब है मेरा रूप।
तेल, गैस न लकड़ी मांगू,
मुझे चाहिए तेज धूप।।

(पहेलियों के उत्तर किसी अन्य पृष्ठ पर देखें)

बालगीत : घमंडीलाल अग्रवाल

समय सुबह का

समय सुबह का ऐसा होता–
कोई घूमे, कोई सोता।।

मलय–पवन के बिछें बिछौने,
हरियाली के सजें खिलौने।

सूरज की किरणों का नर्तन,
पंछी के जैसा उड़ता मन।

वह सबसे गरीब दुनिया में–
जो ऐसे दृश्यों को खोता।।

पंछी चलें लक्ष्य पाने को,
हलधर फसलें उपजाने को।

पों–पों करती मोटर आती,
चाहो जहाँ वहाँ ले जाती।

धीरे–धीरे पंख खोलता–
अति चालाक समय का तोता।।

फूल–फूल पर रंग नया–सा,
है पेड़ों का ढंग नया–सा।

चहल–पहल–सी मैदानों में,
चर्चे खबरों के कानों में।

वैसा ही वह काटा करता–
जैसा बीज यहाँ पर बोता।।

प्रस्तुति : विकास अरोड़ा (रेवाड़ी)

वर्ग पहेली

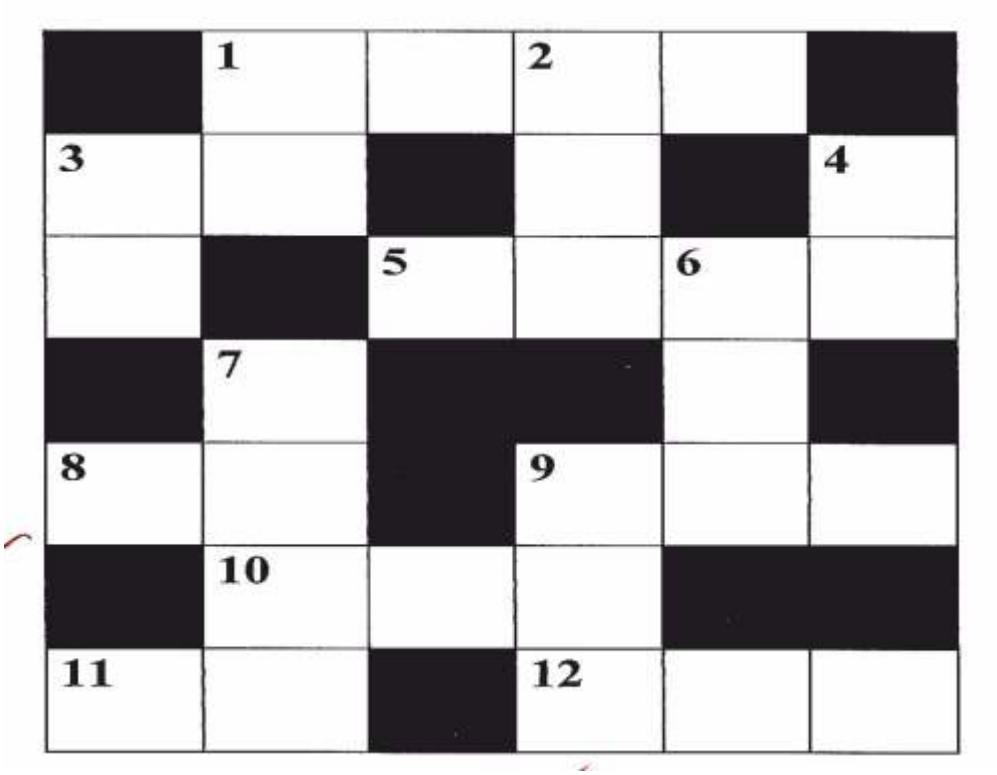

बाएं से दाएं →

1. सत्यभामा और सत्यवती में से जो भगवान श्रीकृष्ण की पत्नी थी।
3. पांडव कितने भाई थे?
5. भगवान श्रीराम के सबसे छोटे भाई शत्रुघ्न की पत्नी।
8. मई और अगस्त के बीच जिस महीने में केवल 30 दिन होते हैं।
9. निर्यात का विपरीत शब्द।
10. पुल्लिंग : सेवक, स्त्रीलिंग : ..... ।
11. चीन और स्पेन में से जो देश यूरोप महाद्वीप में स्थित है।
12. राजा दशरथ का सबसे छोटा पुत्र।

ऊपर से नीचे ↓

1. गुजरात का उच्च न्यायालय गांधीनगर में नहीं, अहमदाबाद में है। (सच / झूठ)
2. किस एशियाई देश की राजधानी का पुराना नाम इन्द्रप्रस्थ था?
3. लोकसभा का कार्यकाल कितने वर्षों का होता है?
4. शुद्ध शब्द छांटिये : मुर्ति / मूर्ति।
6. कीनिया और नेपाल में से जिस देश की राजधानी नैरोबी है।
7. सम्राट अकबर के दरबार का महान गायक।
9. आसमान का एक पर्यायवाची शब्द।

बाल कहानी : राजकुमार जैन 'राजन'

बहादुरी का पुरस्कार

मोनू बंदर अपने मामाजी रॉकी बंदर के घर चम्पकवन में गर्मियों की छुट्टियां बिताने आया था। देवी हिरण, सोनू बंदर, गुलगुल लोमड़ी, जंबो हाथी, बुलबुल गिलहरी आदि उसके अच्छे मित्र बन गये थे। सभी खूब क्रिकेट खेलते थे। अब उसकी छुट्टियां पूरी होने वाली थी। जाने से पहले मामाजी ने उसे क्रिकेट का बैट भी दिलवा दिया था।

उसने अपने मामाजी से कहा कि वह उसे चम्पकवन के रेलवे स्टेशन तक छोड़ आएं। उससे आगे वह स्वयं ही मधुवन वाली गाड़ी में बैठकर अपने घर पहुँच जाएगा।

मोनू के मामाजी रॉकी बंदर ने ऐसा ही किया। गर्मियों के दिन थे। चलती गाड़ी में उसे नींद के झोंके ने आ घेरा। अचानक पहाड़ी ढलान पर गाड़ी के झटके के साथ ही उसकी नींद टूट गई। खिड़की से झांककर देखा, कोई छोटा–सा स्टेशन आ गया था। कुछ सवारियां उसके डिब्बे से उतरी और कुछ नये यात्री चढ़ गये। गाड़ी चल पड़ी।

चलती गाड़ी से जंगल का दृश्य बड़ा सुहावना लग रहा था।

उसने अपने डिब्बे के यात्रियों पर एक सरसरी निगाह डाली। मीनू बकरी अपने तीन मेमनों पारू, लारू और चारू के साथ बैठी थीं। तीनों मेमनों में आपस में बड़ा प्यार दिख रहा था। सामने वाली सीट पर रोमी हिरण, भीखू भेड़िया, चीकू खरगोश, मोंटू हाथी बैठे

थे। कोने वाली सीट पर रानी बंदरिया बैठी थी, जिसने ढेर सारे सोने के गहने पहन रखे थे। शायद नई–नई शादी हुई थी।

गहनों से लदी–फदी उस बंदरिया को देखकर मोनू को अपनी माँ की सीख याद आ गई। यात्रा में गहने नहीं पहनने चाहिएं। जान को खतरा हो सकता है।

वह तो कभी भी सफर में गहने नहीं पहनती हैं। वह कहती हैं– किसी की भी शोभा तो उसके गुणों से होती हैं, गहनों से नहीं। पर सभी तो उसकी माँ की तरह नहीं होते हैं। तभी तो यह बंदरिया इतने गहने पहनकर यात्रा कर रही है।

तभी उसकी नजर सामने वाली बर्थ पर बैठे एक हट्टे–कट्टे भालू पर पड़ी जो देखने में ही बदमाश जैसा लग रहा था और लगातार उस गहने वाली बंदरिया को ही देख रहा था।

मोनू बंदर का मन शंकित हो उठा। हो न हो यह जरूर कोई चोर–उचक्का है और उस बंदरिया के गहने हड़पने की सोच रहा है।

तभी मोनू का शौचालय जाने की इच्छा हुई। वह उठकर शौचालय में चला गया। कुछ देर बाद जब वह लौटा तो डिब्बे का दृश्य देखकर कांप उठा। वह भालू अपने हाथ में लम्बा–सा चाकू लेकर उस बंदरिया के सामने खड़ा था और वह बंदरिया कांपते हाथों से अपने गहने उतार रही थी।

सारे यात्री तो जैसे प्राणहीन हो गये थे और कायरों की तरह गरदन नीची कर के बैठे थे।

मोनू का खून खौल उठा। जल्दी ही उसे एक उपाय सूझ गया। उस भालू की पीठ मोनू

बंदर की तरफ थी इसलिए मोनू ने अपना क्रिकेट का बैट धीरे से उठाकर उस भालू के चाकू वाले हाथ पर जोर से दे मारा।

अचानक हुए प्रहार को वह सम्भाल नहीं पाया। उसके हाथ से चाकू छूटकर नीचे उसके पैर पर जा गिरा। वह दर्द से बिलबिला उठा।

मोनू बंदर जोर से चिल्लाया– पकड़ लो इसे।

इससे पहले कि वह बदमाश भालू झुककर चाकू उठाता, सारे जानवरों ने उसे कसकर पकड़ लिया।

मोनू बंदर दौड़कर स्टेशन मास्टर के पास गया। पुलिस को तत्काल सूचना दी गई। उसकी पूरी बात सुनकर जंगल का थानेदार शेरसिंह अपने कुछ साथियों के साथ उस डिब्बे में पहुँच गया और बदमाश भालू को पकड़कर जंगल के थाने ले गये।

बाद में सभी जानवरों ने जो उस डिब्बे में यात्रा कर रहे थे, मोनू बंदर के साहस की भूरि–भूरि प्रशंसा की।

उसकी बहादुरी के लिए 'जंगल दिवस' के अवसर पर उसे विशेष पुरस्कार दिया गया।

'जामुन'

गुलाबजामुन से अधिक फायदेमंद

जानकारीपूर्ण लेख : विमा वर्मा

जामुन के वृक्ष भारतवर्ष में प्रायः सर्वत्र पाये जाते हैं। सदा हरा–भरा रहने वाला लवंग–कुल का यह वृक्ष अपने खूबसूरत व चिकने पत्तों के कारण सुविख्यात है। वैसे बड़े आकार वाला जामुन अधिक गुणकारी होता है।

आयुर्वेद में जामुन को परम–उपयोगी फल बताया गया है। इसकी छाल, पत्ते, फल, गुठलियां, जड़ इत्यादि सभी आयुर्वेदिक दवाओं में खूब प्रयोग किये जाते हैं। यह तासीर में ठण्डा होता है। कड़वा एवं कैसेला होने के कारण जामुन कफ सम्बन्धी बीमारियों का शमन करता है; साथ ही अनावश्यक गर्मी को शान्त कर शरीर को शीतलता प्रदान करता है। मधुमेह के रोगी के लिए तो यह फल रामबाण–सा कार्य करता है। इसकी गुठली चिकित्सा की दृष्टि से अत्यन्त उपयोगी मानी जाती है क्योंकि इसकी गुठली में 'जग्वोलीन' नामक 'ग्लूकोसाइट' पाया जाता है जो स्टार्च को शर्करा में परिवर्तित होने से रोकता है। इसी से ही शर्करा के नियंत्रण में आसानी होती है। जामुन की गुठली के बारीक पिसे चूर्ण को ठण्डे पानी से तीन ग्राम की मात्रा से प्रातः सायं दो–तीन महीने तक नियमित रूप से लेते रहने पर मधुमेह के रोगी को आशातीत लाभ प्राप्त होता है।

यह मधुमेह के साथ ही यकृत को भी बल देता है। खून बढ़ाता है एवं इसके नित्य प्रयोग से हिलते दाँत एवं ढ़ीले मसूढ़े मजबूत होने लगते हैं।

जामुन के वृक्ष की सुखाई हुई छाल को पीसकर बनाया गया चूर्ण तथा जामुन के सूखे पत्तों को जलाकर बनाई गई भस्म समान मात्रा में लेकर इसमें थोड़ा–सा पिसा हुआ सेंधा नमक मिला लें। बस तैयार हो गया दाँतों को मजबूत एवं टिकाऊ बनाने वाला मंजन।

इसी प्रकार बरसात में होने वाली फोड़े–फुंसियों पर जामुन की गुठली को घिसकर लगाना चाहिए।

हाँ, पर 'एसिडिटी' के रोगियों को जामुन का सेवन नहीं करना चाहिए। हमेशा जामुन का पका हुआ फल ही खाना चाहिए क्योंकि अधपके फल के सेवन से पाचन संस्थान में घाव भी हो सकते हैं। साथ ही जामुन खाने के बाद दूध से परहेज करना चाहिए। दोपहर भोजन के बाद जामुन का सेवन अधिक गुणकारी माना गया है। साथ ही यह भी जरूरी है कि सेवन से पूर्व जामुन को पानी में डुबोकर छोड़ दें। इससे इसकी गर्मी शान्त हो जाती है।

दो बाल कविताएं : मदन देवड़ा

गिलहरी

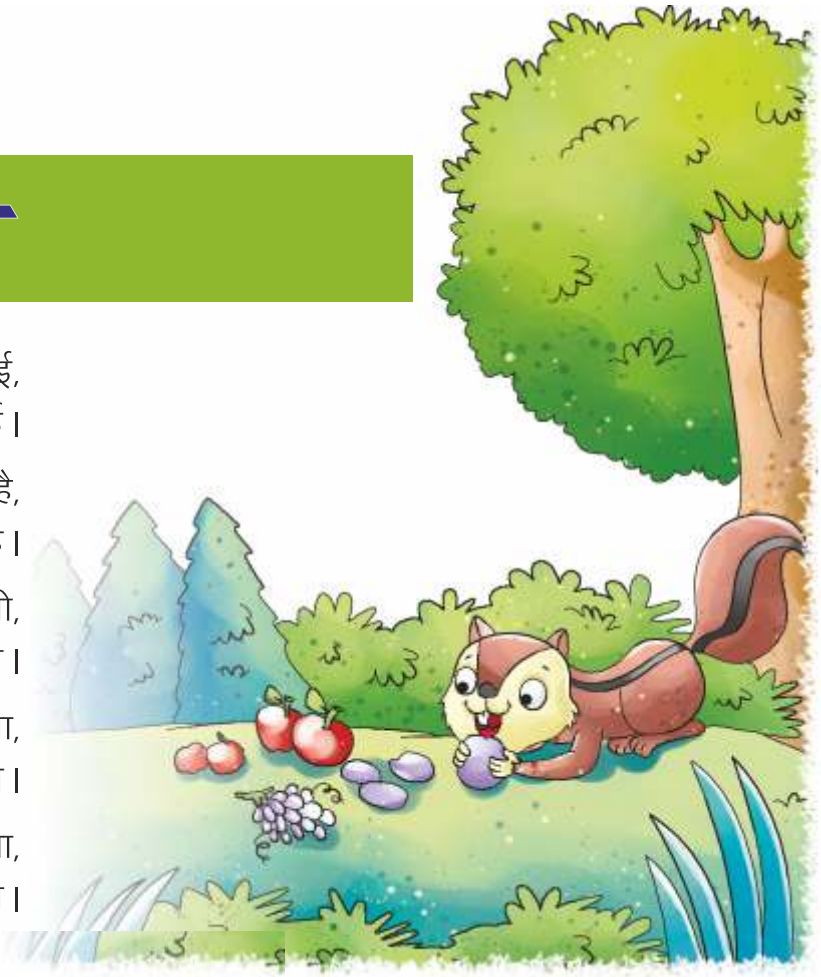

उतर पेड़ से नीचे आई,
अरे गिलहरी है यह भाई।

कुतुर कुतुर फल को खाती है,
सबके मन को यह भाती है।

कभी पेड़ पर यह चढ़ जाती,
कभी उतर नीचे आ जाती।

रंग है इसका भूरा–काला,
सबको लगता प्यारा–प्यारा।

भैया कभी न इसे सताना,
जान किसी की नहीं दुखाना।

बिना टिकट पकड़ाया

नंदनवन से चंदनपुर तक,
चलती थी एक मोटर।

बंदर मामा उसे चलाते,
भालू था कंडक्टर।

एक बार उसमें गीदड़मल,
बिना टिकट पकड़ाया।

भालू जी ने फौरन उसको,
हवालात भिजवाया।

कहानी : सीताराम गुप्ता

कर्म ही है जीवन का वास्तविक आधार

आकाश में घने बादल छाए हुए थे। रिमझिम–रिमझिम बूँदे पड़ रही थीं। ऐसे में जंगल में एक मोर आनंदित होकर नृत्य कर रहा था। उसके ख़ूबसूरत पंख इंद्रधनुषी छटा बिखेर रहे थे। वहाँ से गुज़रने वाला एक व्यक्ति रूककर यह सुंदर दृश्य देखने लगा। तभी अचानक मोर की नज़र उस व्यक्ति पर पड़ी। उस व्यक्ति के हाथ में एक थैला था। मोर ने पूछा कि तुम कहाँ जा रहे हो और तुम्हारे हाथ में ये क्या है?

व्यक्ति ने कहा कि मैं बाज़ार जा रहा हूँ और मेरे हाथ में जो थैला है उसमें अनाज भरा हुआ है। मैं ये अनाज बेचकर एक सुंदर–सा पंख ख़रीद कर लाऊँगा और उससे अपना घर सजाऊँगा।

यह सुनकर मोर बोला, ''देखो मेरे पंख भी बहुत सुंदर हैं। मुझे खाने की तलाश में दिनभर इधर–उधर भटकना पड़ता है। यदि तुम मुझे अनाज दे दो तो मैं तुम्हें अपना ख़ूबसूरत पंख दे दूँगा।'' व्यक्ति को ये सौदा

पसंद आया। उसने अनाज मोर को दे दिया और पंख लेकर ख़ुशी–ख़ुशी अपने घर चला गया।

अब तो वह व्यक्ति रोज़–रोज़ ही अनाज लेकर मोर के पास आता और अनाज के बदले में पंख लेकर खुशी–खुशी अपने घर चला जाता। मोर भी बहुत खुश रहने लगा। अब उसे खाने की तलाश में दिनभर इधर–उधर भटकना नहीं पड़ता था। दिनभर अपनी चोंच से अनाज के दाने चुगता रहता और आराम से पड़ा रहता। धीरे–धीरे उसके पंख कम होने लगे और एक दिन उसके सारे पंख ही समाप्त हो गए। जब पंख समाप्त हो गए तो उस व्यक्ति ने अनाज लेकर आना भी छोड़ दिया। एक दिन मोर का भी सारा अनाज समाप्त हो गया जो उस व्यक्ति द्वारा दिया गया था। अब मोर को भूख लगी तो उसने फैसला किया कि कहीं आसपास जाकर दाना–दुनका जुटाता हूँ। मोर ने उड़ने का प्रयास किया लेकिन वो तो उड़ ही नहीं पा रहा था। उड़े भी तो कैसे? अब उसके पास एक पंख भी तो नहीं बचा था। उसने अपने शरीर पर एक नज़र डाली तो पाया कि पंखों के बिना वह कितना बदसूरत लग रहा है। एक ही जगह पड़े–पड़े और आराम से सारे दिन खाते रहने की वजह से उसका शरीर भी भारी और थुलथुल हो गया था।

मोर ने घर बैठे दानों के लालच में अपनी सुंदरता ही नहीं अपनी उड़ने की क्षमता को भी बेच दिया था और साथ ही अपनी चंचलता व कर्मशीलता से भी हाथ धो बैठा था। वह प्रायः भूखा–प्यासा पड़ा रहता। उसका नाच भी बंद हो गया था क्योंकि न तो उसके पास पंख ही थे ओर न नाचने की शक्ति ही उसमें शेष बची थी। अपनी इस स्थिति के कारण वह बहुत दुखी रहने लगा। अपमान, अभाव व अशक्तता के कारण जल्दी ही वह मौत के मुख में समा गया।

उसके साथ ऐसा क्यों हुआ? उसके साथ ऐसा इसलिए हुआ क्योंकि उसने कर्म करना छोड़ दिया था। मोर की सुंदरता व उसके जीवन का आधार उसके पंखों व उसके नृत्य में है, आरामपरस्ती में नहीं। मनुष्य ही नहीं हर प्राणी के लिए कर्म करना अनिवार्य है। जब भी हम अपना स्वाभाविक कर्म व कर्तव्य का पालन करना छोड़ देते हैं हमारी दुर्गति ही होती है। हम इतने बड़े लालची न बनें कि अपना सौंदर्य, अपनी कला, अपनी योग्यता अथवा अपनी नैतिकता ही किसी लालच के वशीभूत होकर खो बैठें। कर्म द्वारा हम न केवल आसानी से अपनी आजीविका ही कमा सकते हैं अपितु स्वस्थ और रोगमुक्त भी बने रहते हैं। इसलिए **सुविधा नहीं, कर्म ही है जीवन का वास्तविक आधार।**

पहेलियों के उत्तर :

1. मकड़ी, 2. सूरज, 3. चारपाई, 4. गुलाबजामुन, 5. शेर, 6. कुर्सी, 7. पैसा, 8. माचिस, 9. संगीत, 10. गिलहरी, 11. दहीबड़ा, 12. सोलर कुकर।

विज्ञान प्रश्नोत्तरी

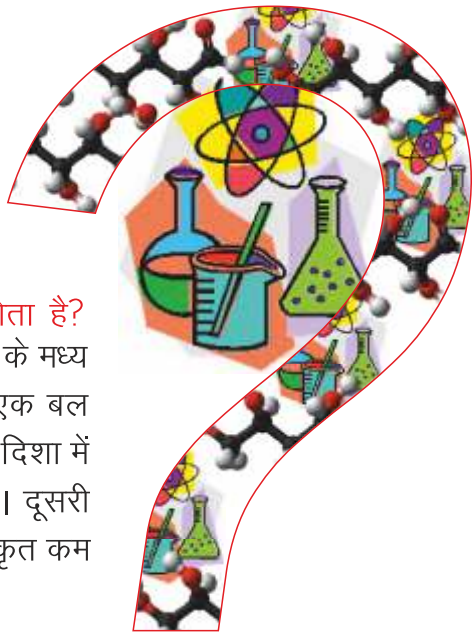

प्रश्न : फिसलन वाली जमीन पर चलना कठिन क्यों होता है?

उत्तर : समतल जमीन पर चलने के क्रम में सतह एवं पैरों के मध्य घर्षण होता है जो क्षैतिज रूप में पीछे की तरफ एक बल (force) लगाता है। परन्तु, बल बराबर एवं विपरीत दिशा में होने की वजह से सतह पर गतिमान हो जाता है। दूसरी ओर, फिसलन वाली जमीन पर यह प्रक्रिया अपेक्षाकृत कम होती है और चलना कठिन होता है।

प्रश्न : सूर्य के प्रकाश की तुलना में बल्ब या ट्यूबलाइट के प्रकाश में पुस्तक के अक्षर धुंधले क्यों दिखते हैं?

उत्तर : दरअसल, प्रकाश दो प्रकार का होता है– प्राकृतिक एवं कृत्रिम। सूर्य का प्रकाश प्राकृतिक है एवं इसमें सात रंगों का एक निश्चित क्रम उपस्थित रहता है। दूसरी ओर बल्ब अथवा ट्यूबलाइट का प्रकाश कृत्रिम होता है जिसमें रंगों का कोई क्रम नहीं पाया जाता। इसी वजह से सूर्य के प्रकाश की तीव्रता बल्ब या ट्यूबलाइट की अपेक्षा अधिक होती है। इसी तीव्रता के अधिक होने की वजह से सूर्य के प्रकाश में तुम सुगमतापूर्वक पुस्तक के अक्षर पढ़ सकते हो।

प्रश्न : जाड़े में ठंडे प्रदेशों के पानी के नल प्रायः क्यों फट जाते हैं?

उत्तर : दरअसल, जाड़े के दिनों में ठंडे प्रदेशों में पानी का ताप शून्य डिग्री सेल्सियस या इससे भी कम हो जाता है। फलस्वरूप, नल का पानी जमकर बर्फ में बदल जाता है। पानी के अवस्था परिवर्तन के कारण (द्रव से ठोस रूप में) उसके आयतन में भी वृद्धि हो जाती है जिससे ठंडे प्रदेशों के पानी के नल प्रायः फट जाते हैं।

प्रश्न : रेगिस्तान में दिन गर्म और रातें ठंडी क्यों होती हैं?

उत्तर : रेगिस्तान में रेत की बहुतायत होती है। रेत ऊष्मा (heat) का अच्छा अवशोषक होता है। अतः दिन के समय सूर्य की ऊष्मा (गर्मी) को ग्रहण कर वह शीघ्र ही गर्म हो जाता है जिससे रेगिस्तान में दिन के समय खूब गर्मी रहती है। दूसरी ओर, रेत ऊष्मा का अच्छा परावर्तक भी होता है जिसकी वजह से वह ऊष्मा (गर्मी) को परावर्तित करके शीघ्र ठंडा हो जाता है। यही कारण है कि रेगिस्तान में रातें ठंडी होती हैं।

विशेष लेख : डॉ. परशुराम शुक्ल

गुजरात का राजकीय पशु : सिंह (Lion)

सिंह बिल्ली परिवार का दूसरा सबसे बड़ा वन्य जीव है। यह बाघ से कुछ छोटा होता है। सिंह की दो प्रजातियां पायी जाती हैं। भारतीय सिंह और अफ्रीकी सिंह। किसी समय भारतीय सिंह एशिया और यूरोप के बहुत बड़े भाग में और अफ्रीकी सिंह सम्पूर्ण अफ्रीका में पाया जाता था, किन्तु अब भारतीय सिंह केवल गुजरात में गिर के जंगलों में और अफ्रीकी सिंह अफ्रीका के कुछ भागों में ही शेष बचा है। सिंह उष्णकटिबन्धीय वनों में ऐसे स्थानों पर रहना पसन्द करता है, जहाँ दूर–दूर तक फैली हुई काँटेदार झाड़ियां, सागौन जैसे वृक्ष और लम्बी–लम्बी घास हो।

सिंह बिल्ली परिवार का एकमात्र ऐसा जीव है, जो समूह बनाकर रहता है। इसके समूह को 'प्राइड' कहते हैं। कुछ सिंह और सिंहनियां खानाबदोश होते हैं। ये समूह नहीं बनाते। ये प्रायः समूह से निष्कासित किये गये सदस्य होते हैं। सिंहों के एक समूह में लगभग 20 सदस्य होते हैं, किन्तु इनकी संख्या 37 तक हो सकती है। इससे बड़े समूह अभी तक नहीं देखे गये हैं।

सिंह रात्रिचर होता है। यह दिन के समय चट्टानों के साये में अथवा छायादार वृक्षों के नीचे आराम करता है और रात में शिकार की खोज में निकलता है। यह शिकार की कमी होने पर लम्बी–लम्बी यात्राएं भी करता है। सामान्यतया एक समूह एक घंटे में पांच किलोमीटर की दूरी तय कर लेता है। कभी–कभी समूह रातभर यात्राएं करता है और एक रात में पचास किलोमीटर तक की यात्रा कर लेता है।

सिंह की शारीरिक संरचना बाघ से बहुत मिलती–जुलती है। सिंह के शरीर का मध्य भाग बाघ से अधिक मोटा होता है तथा इसकी गर्दन के चारों ओर लम्बे और घने बालों की अयाल होती है, अतः यह बाघ से बड़ा दिखाई देता है, किन्तु वास्तव में यह बाघ से छोटा होता है। सिंह की कंधों तक ऊँचाई एक मीटर से सवा मीटर के बीच तथा लम्बाई 2.5 मीटर से 2.75 मीटर तक और शरीर का वजन 180 किलोग्राम से लेकर 225 किलोग्राम तक होता है। सिंहनी का आकार सिंह से छोटा होता है तथा इसके अयाल नहीं होती। सिंह की पूँछ लम्बी और हल्के बालों वाली होती है तथा पूँछ के अन्त में बालों का एक गुच्छा होता है। सिंह का शरीर मजबूत और गठा हुआ होता है। इसके आगे के दोनों पैर बड़े शक्तिशाली होते हैं। इनकी सहायता से अफ्रीकी सिंह एक ही वार में जेब्रा की गर्दन तोड़ सकता है। सिंह का सिर बिल्ली प्रजाति के सभी वन्यजीवों से बड़ा होता है। इसका सिर बाघ के सिर से भी बड़ा होता है। सिंह के जबड़े भारी और मजबूत होते हैं तथा इनकी संरचना इस प्रकार की होती है कि यह इनकी सहायता से बड़े से बड़े जीव को अपना आहार बना सकता है। सिंह के आगे के पैरों के नाखून बड़े मजबूत तथा तेज होते हैं और इनमें भीतर की ओर मुड़ने की अद्भुत क्षमता होती है। इनकी सहायता से इसे भागने और शिकार करने में विशेष सुविधा रहती है।

सिंह के शरीर का रंग हल्के भूरे से लेकर गहरा भूरा तक होता है। इसका मस्तक चौड़ा

और आँखें बड़ी होती हैं तथा आँखों का रंग हल्का पीलापन लिये हुए होता है। सिंह के कंधों और गर्दन के चारों तरफ अयाल होती है। कभी–कभी इसके पेट पर भी अयाल देखने को मिल जाती है। अफ्रीकी सिंह की अयाल भारतीय सिंह की अयाल से बड़ी और अधिक घनी होती है। अफ्रीका में कुछ सिंह ऐसे भी पाये जाते हैं, जिनके अयाल नहीं होती।

सिंह पूर्णतया मांसाहारी जीव है, किन्तु कभी–कभी इसे वृक्षों से गिरे हुए फल भी खाते हुए देखा गया है। सिंह एक शक्तिशाली एवं कुशल शिकारी वन्यजीव है। यह शिकार के समय 3.7 मीटर तक ऊँची और 11 मीटर तक लम्बी छलांग लगा सकता है। यह आवश्यकता पड़ने पर 48 किलोमीटर प्रति घंटा तक की गति से भाग सकता है, किन्तु इसकी संरचना इस प्रकार की होती है कि यह लम्बी दूरी तक तेज गति से नहीं भाग सकता।

सिंह का शिकार करने का ढंग बाघ (Tiger) शेर से पूरी तरह अलग होता है। बाघ प्रायः अकेले शिकार करता है, जबकि सिंह समूह में शिकार करता है। बाघ प्रायः अपने शिकार पर पीछे से आक्रमण करता है, जबकि सिंह अपने शिकार पर सामने से आक्रमण करता है। सिंह लम्बी दूरी तक तेज गति से शिकार का पीछा नहीं कर सकता, अतः यह शिकार के लिए एक विशेष ढंग अपनाता है। यह शिकार की गंध मिल जाने के बाद उसके निकट पहुँचने का प्रयास करता है और फिर आसपास की घास में अपने को छिपाते हुए जमीन से चिपक कर शिकार की ओर बढ़ता है और लगभग 30 मीटर की दूरी रह जाने पर अचानक घात लगाकर हमला कर देता है।

सिंह सामान्यतया मानव बस्तियों से दूर ही रहना पसन्द करता है, किन्तु भोजन की कमी होने पर यह पालतू पशुओं के बाड़े में घुस जाता है तथा बड़ी निर्दयता से शिकार करता है। यह पशुओं के बाड़े में घुसकर किसी एक जानवर को जिन्दा ही पकड़कर बाहर खींच लाता है। इस मध्य यदि जानवर वापस बाड़े में जाने का प्रयास करता है तो 'प्राइड' के अन्य सदस्य उसे ऐसा नहीं करने देते और सभी मिलकर उसे बाहर खींच लाते हैं तथा मारकर खा जाते हैं। सिंह के आगे के पैर बहुत शक्तिशाली होते हैं तथा किसी भी वस्तु को खींचने की इनकी क्षमता दस आदमियों के बराबर होती है।

सिंह एक दिन में अर्थात 24 घंटों में लगभग 20 घंटे आराम करता है। यह सुरक्षा और शिकार के लिए आवश्यक है। सिंह के विश्राम करने से उसमें ऊर्जा अथवा शक्ति एकत्रित हो जाती है, जिसका उपयोग अन्य सिंहों से लड़ने अथवा शिकार के लिए किया जाता है। सिंह में बिना भोजन किये लम्बे समय तक जीवित रहने की विलक्षण क्षमता होती है। यह तीन सप्ताह तक बिना भोजन किये जीवित रह सकता है। शिकार की कमी होने पर सिंह बड़ा दुबला–पतला और कमजोर हो जाता है। ऐसी स्थिति जंगल में प्रायः आती–रहती है क्योंकि बहुत अधिक गर्मी और सूखे के समय हिरन और गवय आदि प्रवास कर जाते हैं, किन्तु सिंह अपने क्षेत्र में ही रहता है। सूखे और गर्मी तथा शिकार की कमी का प्रभाव 'प्राइड' पर भी पड़ता है। शिकार की कमी होने

पर 'प्राइड' के सदस्य बिखर जाते हैं, किन्तु वर्षा होने के बाद हिरन आदि वन्यजीवों के लौट आने पर प्राइड पुनः पहले जैसा हो जाता है।

सिंह शावक एक वर्ष की आयु में स्वतंत्र रूप से शिकार करने लगते हैं तथा लगभग दो वर्ष में वयस्क हो जाते हैं। 'प्राइड' में नर वयस्कों का कोई स्थान नहीं होता। इन्हें वयस्क होते ही 'प्राइड' छोड़ना पड़ता है, किन्तु मादाएं 'प्राइड' में ही बनी रहती हैं।

भारत सरकार सिंह की गिरती हुई स्थिति से चिन्तित थी तथा किसी प्रकार सिंह को विलुप्त होने से बचाना चाहती थी। आजादी के बाद भारत सरकार ने 'गिर' को राष्ट्रीय उद्यान घोषित कर दिया और सिंहों के शिकार पर पूरी तरह प्रतिबंध लगा दिया। इससे सिंहों के शिकार में कुछ कमी तो अवश्य आयी, किन्तु कोई उत्साहवर्धक परिणाम सामने नहीं आये। अन्त में भारत सरकार ने सिंहों की संख्या बढ़ाने के लिए 1972 में 'प्रोजेक्ट लॉयन' आरम्भ किया। 'प्रोजेक्ट लॉयन' को 'प्रोजेक्ट टाइगर' के समान तो सफलता नहीं मिली, किन्तु फिर भी लगभग 30 वर्षों में भारतीय सिंह की संख्या 180 से बढ़कर 304 हो गयी। इस समय विश्व में लगभग 500 सिंह हैं। इनमें लगभग 300 सिंह गिर राष्ट्रीय उद्यान में हैं तथा 200 सिंह देश–विदेश के विभिन्न चिड़ियाघरों में रखे गये हैं।

भारत में सिंहों की गणना दो प्रकार से की जाती है। मृत सिंहों की गणना द्वारा और पंजों के निशानों द्वारा। कभी–कभी सिंहों की गणना के लिए जंगली भैंसों का उपयोग किया जाता है। इसके लिए जंगल में विभिन्न स्थानों पर 100 जंगली भैंसे बाँध दिये जाते हैं। सिंह इन्हें मारकर खाते हैं जिससे इनकी संख्या का पता

चल जाता है। सामान्यतया एक सिंह एक भैंसा पांच दिन में खा लेता है।

भारतीय सिंह के समान ही अफ्रीकी सिंह की स्थिति भी अच्छी नहीं है। किसी समय सम्पूर्ण अफ्रीका में बहुत बड़ी संख्या में सिंह पाये जाते थे, किन्तु अब ये केवल घाना, युगाण्डा, तंजानिया जैसे कुछ देशों में शेष बचे हैं।

सिंह की स्थिति अभी भी ठीक नहीं है। इसकी संख्या कभी धीरे–धीरे बढ़ती है तो कभी तेजी से कम होने लगती है। अतः इसके विलुप्त होने की आशंका अभी भी समाप्त नहीं हो पायी है। सिंह को बचाने के विशेष प्रयास आवश्यक हैं। यदि ऐसा नहीं किया गया तो यह शानदार वन्यप्राणी भारतीय चीते के समान हमेशा–हमेशा के लिए धरती से समाप्त हो जायेगा।

बाल कहानी : विपिन कुमार

किताब के पन्ने

निशि का मन गणित छोड़कर कोई भी विषय पढ़ने में नहीं लगता था। वह रात–दिन गणित के सवालों में ही उलझी रहती। फलतः वह परीक्षा में दूसरे विषयों में फेल हो जाती। घर में माता–पिता और विद्यालय में शिक्षक समझाते– देखो निशि! जीवन में सफलता के लिए सभी विषयों का ज्ञान आवश्यक है। तेज विद्यार्थी को सभी विषयों पर ध्यान देना चाहिए।

किन्तु निशि के कानों पर जूँ तक नहीं रेंगती। वह अपनी ही लीक पर चलती आ रही थी।

अन्य दिनों की ही तरह उस दिन भी निशि गणित के सवाल बना रही थी कि उसे नींद आने लगी। वह बिछावन पर ही लुढ़क गई। उसका बस्ता वहीं बगल में पड़ा था। पेंसिल, कलम, ज्योमेट्री बॉक्स एवं गणित की कापी सबके सब उसके पांव की तरफ छितराए पड़े थे।

आँख लगते ही उसने देखा कि संस्कृत की किताब उसके थैले से निकलकर एक सफेद परी बन गई और कमरे से बाहर जा रही है। साथ में उलाहना भी दे रही है– ''निशि, अब मैं तुम्हारे यहाँ नहीं रहूंगी। जब तुम मुझे पढ़ती ही नहीं हो, तब यहाँ रहने से क्या फायदा?''

निशि अभी कुछ उत्तर दे पाती कि हिन्दी की किताब के पन्ने जोर से फरफराए और किताब एक काली तितली बनकर कमरे से बाहर निकलने लगी। उसने निशि को घूरते हुए कहा– ''निशि मैं अब तुम्हारे थैले में नहीं रहूंगी। तुम मुझे कभी भी नहीं पढ़ती हो। ... मगर सुनो, मेरे ज्ञान के बिना तुम न तो ठीक से बोल पाओगी न ही लिख पाओगी।''

निशि अपनी शेष किताबों को थैले से निकलने नहीं देने के लिए अभी थैले का बटन लगाना ही चाहती थी कि सामाजिक विज्ञान की पुस्तक के पन्ने के सभी चित्र एवं नक्शे एकाएक मिट गये। पुस्तक के पन्ने पहले सफेद हो गये फिर वे फरफरा कर अलग होकर रूई के छोटे–छोटे फाहे बनकर आकाश में उड़ गये। साथ में उन्होंने निशि को चेतावनी भी दी– ''निशि, मैं जा रही हूँ क्योंकि तुमने गणित के चक्कर में मुझे कभी पढ़ा ही नहीं। लेकिन याद रखना बिना मेरे ज्ञान के आदमी दीन–दुनिया से अनभिज्ञ ही रह जाता है। अपने इतिहास, समाज, देश, कर्तव्य एवं अधिकार के बारे में आखिर तुम कैसे जानोगी?''

निशि कुछ बोल पाती कि उसने देखा उसकी अंग्रेजी वाली पुस्तक एकाएक हरी हो गई और तोता बनकर उड़ने लगी। उड़ते–उड़ते

वह अपनी पीड़ा एवं रोष भी प्रकट कर गई– निशि तुम बिना मुझे जाने किस तरह गणित के प्रश्नों को समझ पाओगी? कैसे तुम इंजीनियरिंग, मेडिकल, कम्प्यूटर आदि की किताबें पढ़ पाओगी?

निशि कुछ बोलना ही चाहती थी कि उसने देखा उसकी सर्वप्रिय पुस्तक गणित– एक काली छाया बनकर वहाँ से गायब हो गई। निशि ने सुना, वह काली छाया कह रही थी– ''निशि अब मैं अकेली रहकर क्या करूँगी? तुमने मेरी सभी बहनों को घर से बाहर निकाल दिया, तब यहाँ मेरा क्या काम! तुमने तो मुझे उन सबकी नजर में कलंकित कर दिया। देखती नहीं मेरा बदन! शर्म एवं दुख से काली हो गई हूँ मैं।''

उस काली छाया की बात सुनकर निशि चिल्लाती हुई उसे पकड़ने को दौड़ी, इस क्रम में उसकी नींद टूट गई। उसे अपनी गलती का बोध हो चुका था। उसने अपनी छितराई किताब, कॉपी, पेंसिल आदि को समेटते हुए संकल्प लिया– आज से मैं सभी विषयों को पढ़ूंगी।

निशि ने अपने संकल्प का पालन किया और अगली परीक्षा में वह अपनी कक्षा में प्रथम आई।

किट्टी

चित्रांकन एवं लेखन
अजय कालड़ा

बातों ही बातों में व्यक्ति ने किट्टी को टॉफी खाने को दी और किट्टी बिना कुछ सोचे-समझे वह टॉफी खा ली।
टॉफी खाते ही किट्टी को चक्कर आने लगे और वह बेहोश हो गई।
किट्टी को होश आया तो वह अपने आपको एक अन्जान जगह पाकर डर गई और रोने लगी।

किट्टी उठने की कोशिश करती तो वह गिर जाती। उसने अपने हाथ-पैर बँधा देखकर जोर-जोर से रोने लगी।
सुबह से शाम हो गई। किट्टी के घर उसके माता-पिता परेशान होकर पुलिस में रिपोर्ट लिखवाने गये।
रिपोर्ट लिखते ही पुलिस किट्टी की खोज़ में निकल पड़ी।

पुलिस अपनी गुप्त जानकारी के आधार पर किट्टी के अपहरणकर्ता का और किट्टी का पता लगा लेती है। यह अपहरणकर्ता कुछ समय से इस इलाके के बहुत से बच्चों को उठा कर पास के जंगल में गुप्त स्थान पर ले जाता था।
पुलिस उस जगह पहुँची जहाँ किट्टी और अपहरणकर्ता थे। पुलिस अपहरणकर्ता को किट्टी और दूसरे बच्चों के अपहरण करने के जुर्म में गिरफ्तार कर लेती है।
पुलिस किट्टी को सही सलामत उसके घर छोड़ देती है तथा किट्टी को इंस्पैक्टर समझाते हैं कि कभी अन्जान व्यक्ति कुछ भी खाने को दे तो कभी मत लो।
पुलिस के जाते ही किट्टी अपने माता-पिता से गले लग गई। माता पिता ने भी उसे खूब प्यार दिया।

दो बाल कविताएं : हरजीत निषाद

आजादी का पर्व महान

आजादी का पर्व महान।
मिला हमें देकर बलिदान।
सदा बढ़ाएं देश की शान।
इस धरती पर हों कुर्बान।

उन्नीस सौ सैंतालिस वर्ष।
पन्द्रह अगस्त आया सहर्ष।
भागा दुश्मन खत्म संघर्ष।
उपजा सबके मन में हर्ष।

अब परतंत्र न होने पाए।
शान न देश की खोने पाए।
युवा शक्ति न सोने पाए।
जाग्रति का सन्देश सुनाएं।

आजादी की शान तिरंगा

ध्वज तिरंगा भारत का ये,
लहर लहर लहराए।
गौरव है यह मातृभूमि का,
देश की शान बढ़ाए।।

तीन रंग से बना तिरंगा,
शांति प्रेम फैलाए।
हिन्दू मुस्लिम सिख ईसाई,
निकट सभी को लाए।
इसकी शान न मिटने देंगे,
प्राण भले ही जाएं।।

शिखरों पर मैदानों में,
हर जगह ये शोभा पाता।
सागर के सीने पर चलते,
पोतों पर फहराता।
इसको आगे लेकर चलती,
हैं तीनों सेनाएं।।

ऊँचा सदा उठाएंगे हम,
कभी न झुकने देंगे।
बुरी नजर डाले गर कोई,
सबक उसे हम देंगे।
आजादी की शान तिरंगा,
ऊँचा उड़ता जाए।।

जानकारी : कमल जैन

अब स्टार ट्राम करायेगी परीलोक की यात्रा ...

दोस्तों! यह बात तो तुम जानते ही हो कि अंतरिक्ष की माया बड़ी अजीब है, कई कुदरती रहस्य इसमें छिपे हैं। सूरज, चाँद–सितारों और कई ग्रहों के स्थान भी अपने आप में अजूबे हैं। तुम्हें जानकर अचरज होगा कि आने वाले समय में तुम अंतरिक्ष की सैर एक ट्रेन में बैठकर कर सकोगे। उम्मीद है यह ट्रेन दो दशक उपरांत बनकर तैयार हो जाएगी। दुनिया के कई वैज्ञानिक इस ट्रेन के निर्माण में जुटे हैं।

हाँ, अंतरिक्ष की सैर का यह अनूठा आनन्द किसी स्वप्न या परीलोक से कम नहीं होगा। आओ, इसी संदर्भ में तुम्हें जानकारी बताते हैं।

अंतरिक्ष की सैर कराने वाली इस ट्रेन का नाम है– 'स्टार ट्राम'। चुंबकीय क्षेत्र पर चलने वाली ट्रेनों की तरह ही यह ट्राम अंतरिक्ष में उड़ान भरेगी। इसे सबसे पहले एक लम्बे 'रनवे' पर दौड़ाया जाएगा। उसके बाद 10 डिग्री कोण पर करीब 8000 मीटर ऊँची ट्यूब में भेजा जाएगा, जो पृथ्वी के किसी ऊँचे पहाड़ पर स्थित होगी। वहीं से यह ट्राम अंतरिक्ष में प्रवेश करेगी, फिर इसी रास्ते से वापस भी आएगी।

इस ट्राम को पूरी तरह से सौर ऊर्जा आधारित बनाया जाएगा। सौर ऊर्जा को बिजली में बदलकर और उसे चुंबकीय ट्यूब में दौड़ाकर ट्राम को अधिकतम गति प्रदान की जाएगी।

यह अंतरिक्ष ट्राम 8 किलोमीटर प्रति सेकिण्ड की गति से चलेगी, फिर भरेगी उड़ान। इसकी लांचिग ट्यूब 110 किलोमीटर लम्बी और 3 मीटर चौड़ी होगी। 13 मीटर लम्बा और 2 मीटर चौड़ा होगा ट्राम। 10 लांच प्रतिदिन हो सकेंगे।

अमेरिकी अंतरिक्ष वैज्ञानिकों समेत कई बड़े वैज्ञानिक इस परियोजना में जुटे हुए हैं। चुंबकीय क्षेत्र पर चलने वाली ट्रेन डिजाइन करने वाले वैज्ञानिक पॉवेल जेम्स ने इसे पूर्णतः संभव बताया है। वैसे इस परियोजना की परिकल्पना मैग्नेटिक ट्रेन की डिजाइन के बाद से ही हो गई थी। 1960 में जेम्स और गॉर्डन डेनबी ने मैग्लेव ट्रेनों की डिजाइनिंग की। इसके बाद पॉवेल ने स्टार ट्राम कम्पनी बनाई। उनके साथ जुटे हैं एयरोस्पेस इंजीनियर डॉ. जॉर्ज मईसे। 2001 में पहली बार इस परियोजना को दस्तावेजी प्रजेन्टेशन दिया गया। बाद में नासा के वैज्ञानिकों ने इसका आधुनिक कम्प्यूटर मॉडल तैयार किया।

सद्वाक्य

- ✯ शिक्षा का उद्देश्य है व्यक्तित्व का पूर्ण विकास।
- ✯ श्रद्धा से शिष्य की परख होती है।
- ✯ क्रोध मनुष्य की उन्नति में बाधक है।
- ✯ क्रोध मनुष्य के विवेक को समाप्त कर देता है।

प्रस्तुति : कु. प्रतीक्षा कुशवाहा

बाल कथा : दिनेश दर्पण

छोड़ दो मुझे...

घर की खिड़की पर एक पिंजरा रखा था। देखने में तो वह साधारण–सा ही पिंजरा था, पर जब उसमें किसी पंछी को बंद किया जाता तो वह उसको छोड़ देता था यानी मुक्त आकाश में उड़ा देता था। सुबह–सुबह मुँह–अंधेरे जब सब लोग सोये रहते तब पिंजरा और खिड़की (पिंजरे की छोटी–सी खिड़की) खुल जाती, पिंजरा भी अपने तार चौड़े कर देता और पंछी फुर्रर्र से खुले आसमान में उड़ जाता था।

एक बार एक तोते को उसमें रखा गया। सुबह–सुबह हमेशा की तरह पिंजरे में हरकत हुई। पिंजरे ने अपने तार फैला दिये मगर तोता तो हमेशा की तरह 'घोड़े बेचकर' गहरी नींद में सो रहा था।

–अरे उठ! उड़ जा सुबह हो गई।– पिंजरे ने तोते से कहा।

–क्यों आप मुझे क्यों भगा रहे हो?– तोते ने पिंजरे से पूछा।

–उड़ जा! और आजादी से जीवन जी। पिंजरे ने पुनः तोते से कहा।

–हूँ! आजादी से जिऊँ? क्यों जी मुझे वहाँ खाने को कौन देगा? जमीन पर पड़े टुकड़े बटोरता फिरूंगा क्या?– तोता बोला।

–पर अभी तो तू कैद में है।– पिंजरे ने कहा।

–तो क्या हुआ?– तोते ने उत्तर दिया।

–तुम्हारी समझ में कुछ आया?– पिंजरे ने अपनी ताक (पिंजरे की छोटी–सी खिड़की) से पूछा।

–मुझे लगता है, यह तोता बहुत अक्लमंद है।– ताक ने जवाब दिया। दिन बीतने लगे। तोता चैन से जी रहा था। पर पिंजरा हमेशा इसी सोच–विचार में उलझा

रहता था कि क्या मैं बेकार (व्यर्थ) में ही पंछियों को छोड़ता रहता था? क्या उनके लिए आजादी से जीना ज्यादा मुश्किल है। उसे ये सवाल हमेशा कुरेदता रहता था।

फिर एक दिन तोता किसी दूसरे आदमी को दे दिया गया और खाली हुए उस पिंजरे में एक गौरेया को बंद कर दिया गया।

–शैतान कहीं के! छोड़ मुझे।– दरवाजा (ताक) बंद होते ही गौरेया चिल्लाने लगी।

पिंजरा उसे समझाने लगा– अरे सब्र कर (धैर्य रख) पगली। यहाँ तुझे दाना–पानी मिलेगा।

पर गौरेया तो कुछ सुनना ही नहीं चाहती थी। उसने तो बस ''छोड़ दो मुझे... छोड़ दो मुझे...'' की ही रट लगा रखी थी।

–अब तुम्हारी समझ में कुछ आया।– पिंजरे ने खिड़की से पूछा।

–मुझे लगता है यह गौरेया बहुत अक्लमंद नहीं है।– खिड़की ने खुलते हुए कहा।

पिंजरे ने एक गहरी सांस लेकर तार फैला दिये। गौरेया खुशी से चहचहायी और पलक झपकते ही खिड़की से बाहर निकल गई और फुर्रर्र से अपने पंख फैलाकर मुक्त गगन में उड़ गई।

–थोड़ी देर बाद पिंजरे ने खिड़की से कहा– पता नहीं क्यों गौरेया जो बहुत देर तो नहीं रही थी, फिर भी मुझे अच्छी लगने लगी थी।

खिड़की ने जवाब दिया– हाँ! मुझे भी।

गुलाम की तरह पिंजरे में बंद रहने वालों को आजादी की जिन्दगी क्या होती है। वे क्या जानें।

–कहानी की सत्यता जो भी रही हो परन्तु यह सत्य है कि जो मनुष्य अपने पुराने संस्कारों व अंध श्रद्धा में ही परम्पराओं का दास बनकर उन्हें गुलामों की तरह निभाते हैं वे मुक्त कभी नहीं रह सकते, उनका उद्धार

जानकारी : पुष्पेश कुमार पुष्प

जिसने आंखें खोली उसकी रोशनी गयी

क्या आप विश्वास करेंगे! अगर हम कहें कि इस धरती पर एक गाँव ऐसा है जहाँ सारे लोग अंधे हैं, पशु–पक्षी भी। अंधों के इस गाँव का नाम है– टुलप्टिक जो मेक्सिको के समुद्र तट पर बसा एक छोटा–सा गाँव है। यहाँ लगभग सात सौ रेड इंडियन निवास करते हैं। इनके मकान पक्के नहीं बने हैं बल्कि ये बिना दरवाजे, खिड़कियों वाली झोंपड़ी में निवास करते हैं। ये लोग जमीन पर सोते हैं तथा इनका भोजन सेम, फल, मक्का और मिर्च है। उनके पास खेती करने के लिए लकड़ी के औजार हैं। ये लोग जापुटिक कबीले से सम्बन्ध रखते हैं।

इस गाँव में जन्म लेने वाला बच्चा तो एकदम स्वस्थ होता है, किन्तु कुछ समय बाद उसकी आँखों की रोशनी स्वयं चली जाती है। ऐसा केवल मनुष्यों के साथ ही नहीं होता बल्कि पशु–पक्षियों के साथ भी होता है।

सुबह होते ही पशु–पक्षियों की आवाज इन्हें जगा दिया करती है और फिर ये लोग अपने काम में लग जाया करते हैं। पुरुष खेतों में काम करने चले जाते हैं तो महिलाएं अपने घरेलू काम–काज में लग जाया करती हैं। बच्चे पेट के बल रेंग–रेंगकर खेलते हैं।

1827 में सबसे पहले मेक्सिको के विख्यात समाजशास्त्री डॉ. ग्यारडो को इस विषय में जानकारी मिली। वे इस रहस्य को उजागर करने के उद्देश्य से टुलप्टिक में रहने का निश्चय किया। लेकिन वे इस रहस्य का खुलासा करने में असफल रहे। आवास के प्रथम सप्ताह में ही ग्यारडो में दृष्टिदोष का पहला लक्षण प्रकट हुआ और वे अपना बोरिया–बिस्तर समेटकर वहाँ से भागे।

स्पेनवासियों को अंधों के इस विचित्र गाँव के विषय में सोलहवीं शताब्दी में ही जानकारी मिल गयी थी। आखिर इस गाँव में पैदा होने वाला बच्चा कुछ समय बाद अंधा क्यों हो जाता है। इस विषय पर जापुटिक कबीले के इन लोगों का कहना है कि लावरजोइजा नामक वृक्ष पर नजर पड़ते ही वे लोग अंधे हो जाते हैं। उनकी यह मान्यता काफी पुराने समय से चली आ रही है। वैज्ञानिकों ने इस विषय पर काफी शोध किया, पर यह सिद्ध नहीं हो पाया कि लावरजोइजा पर नजर पड़ते ही लोग अंधे हो जाते हैं।

वैज्ञानिकों ने शोध कर पता लगाया है कि यह भयानक रोग इनकरस्पास नामक कीटाणु के कारण होता है और इन कीटाणुओं को एक प्रकार की मधुमक्खियां फैलाती हैं। ये मक्खियां डेढ़ इंच लम्बी होती हैं।

दर्जिन चिड़िया

प्रस्तुति : किरणबाला

आपने तरह–तरह की चिड़ियां देखी होंगी, लेकिन जो बात दर्जिन चिड़िया में है, वह भला दूसरों में कहाँ। जिस तरह एक कुशल दर्जी कपड़े सीता है, उसी प्रकार यह चिड़िया भी अपनी चोंच से तिनके, पत्तियों आदि को सीकर घोंसला तैयार करती है।

जीव–विज्ञान की दृष्टि से टेलर बर्ड्स (दर्जिन चिड़िया) वार्बलर परिवार के अंतर्गत आती है। यह आर्थोटोमस प्रजाति की चिड़िया है। वैसे इसका वैज्ञानिक नाम आर्थोटोमस सुटोरियस है। यह दक्षिण एशिया और पूर्वी दक्षिण एशिया में बहुतायत से पाई जाती है।

दर्जिन चिड़िया का घोंसला बनाने का तरीका भी निराला है। सर्वप्रथम ये दो या तीन पत्ते चुनती है जो आकार में बड़े होते हैं। फिर उनके किनारों में छेद करती है। इसके बाद यह धागा लाकर इन छेदों में धागे डालकर उन्हें आपस में सी देती है। घोंसला बनाने में इसे काफी मेहनत करनी पड़ती है।

इसका घोंसला प्यालेनुमा होता है। घोंसले में रूई, ऊन, रेशम की गद्दी बिछी होती है। दूर से देखने पर वह बटुए जैसा दिखाई देता है। घोंसले का मुँह ऊपर की ओर होता है।

किसी भी चीज को सीने के लिए सुई–धागे की आवश्यकता होती है। सुई का काम इसकी चोंच करती है और धागे के लिए यह सरपत के पतले तारों, सेमल और आकड़े की रूई से बने धागे का इस्तेमाल करती है। वह मकड़ी के जालों के धागे का इस्तेमाल भी सीने में करती है।

आकार में यह गौरेया से कुछ छोटी होती है। रंग जैतुनी हरा–सा होता है। पंख छोटे, गोलाकार होते हैं। शरीर के अनुपात में पूंछ काफी लम्बी किन्तु मजबूत होती है। जहाँ तक चोंच का प्रश्न है, वह घुमावदार और नुकीली होती है। स्वभाव से यह काफी निडर और चंचल होती है।

यह सर्वभक्षी चिड़िया है यानी कीड़े–मकोड़ों के अलावा अनाज, कोमल अंकुरित पौधे, फूलों का मधुर रस आदि का सेवन करती है। हमारे घरों में यह शौक से शाकाहार ग्रहण करती है।

यह चिड़िया दिनभर इधर–उधर फुदकती रहती है इसलिए कुछ लोग इसे फुदकी चिड़िया भी कहते हैं।

पढ़ो और हँसो

सब्जी बेचने वाले के घर पर जब बच्चा हुआ तो एक महिला ने कहा– बधाई हो, बच्चा कैसा है?

–एकदम ताजा है, बहन जी!– सब्जी बेचने वाले ने जवाब दिया।

★★★—★★★

सुनीता : (सपना से) क्या बताऊँ, मेरा मुन्ना तो हरदम अंगूठा ही चूसता रहता है। कोई उपाय बताओ?

सपना : तुम ऐसा करो। अपने मुन्ने को एक ढीली निक्कर पहना दो। दिनभर वह अपनी निक्कर को ही सम्भालता रहेगा और अंगूठा चूसने की आदत अपने आप छूट जायेगी।

★★★—★★★

कवि : आपको मेरी कविता पसन्द आई?

योगिता : मुझे उसका अन्त सुन्दर लगा।

कवि : किस जगह?

योगिता : जब आपने कहा कि कविता समाप्त हुई।

★★★—★★★

दिनेश ने सोये हुए शेर को लात मारकर जगाया और प्रवीण से बोला– प्रवीण भाग।

प्रवीण बोला– मैं क्यों भागूं। लात मैंने थोड़े ही मारी है।

एक नौकर ने अपने कंजूस मालिक से कहा– 'साहब' मैंने ख्वाब देखा कि आपने मुझे एक हजार रुपये एडवांस दिये हैं।

मालिक ने कहा– ठीक है, अगले महीने तुम्हारी तनख्वाह से काट लिए जाएंगे।

★★★—★★★

पत्नी : अजी, क्या यह सच है कि रुपये–पैसे भी बोलते हैं?

पति : हाँ, कहते तो ऐसा ही हैं।

पत्नी : तो फिर आप दफ्तर जाने से पहले मुझे कुछ पैसे दे जाना, मैं घर में अकेली बैठी बोर होती रहती हूँ।

★★★—★★★

चूहा : (बिल्ली से) बिल्ली मौसी! आज तुम्हारी मेरे यहाँ दावत है।

बिल्ली बोली– जरूर–जरूर आऊँगी तुमने बुलाया जो है।

बिल्ली मौसी शाम को आई और चूहे से बोली– म्याऊँ–म्याऊँ।

यह सुनकर चूहा बोला– रूको–रूको जरा मैं बिल में छुप जाऊँ।

★★★—★★★

रोहित की माँ की तबीयत खराब हो गई। वह उसे लेकर अस्पताल गया।

डॉक्टर ने कहा– इनके कुछ टैस्ट होंगे।

रोहित घबराकर बोला– हे भगवान, अब क्या होगा, मेरी माँ तो अनपढ़ है।

डॉक्टर : पिछली बार याददाश्त बढ़ाने के लिए जो दवा ले गये थे उससे कुछ फर्क नहीं पड़ा?

मरीज : अभी तक कुछ फर्क नहीं पड़ा, रोज दवा लेना ही भूल जाता हूँ।

★ ★ ★ ★ ★ ★

प्रिंस, उज्ज्वल और पुल्कित एक मोटरसाइकिल पर कहीं जा रहे थे। ट्रेफिक पुलिस ने रोक लिया।

पुलिसवाला : क्या आप लोगों को पता नहीं है कि मोटरसाइकिल पर तीन सवारी की पाबंदी है?

पुलकित : पता है इसीलिए तो एक को वापिस छोड़ने जा रहे हैं।

★ ★ ★ ★ ★ ★

गृहिणी : (दूध वाले से) सुबह 6 बजे दूध देने आया करो।

दूध वाला : मैडम जल्दी नहीं आ सकता क्योंकि 6 बजे नल में पानी नहीं आता।

★ ★ ★ ★ ★ ★

एक ट्रक दूसरे ट्रक को रस्सी से बाँधकर खींच रहा था। यह देख राह चलते एक व्यक्ति को हँसी आ गई। वह कहने लगा– हे भगवान एक रस्सी को ले जाने के लिए दो–दो ट्रक।

– गुरचरण आनन्द (लुधियाना)

★ ★ ★ ★ ★ ★

एक बार एक व्यक्ति हेलमेट और पैड पहनकर बल्ला उठाकर टी.वी. पर मैच देख रहा था।

उसके बेटे ने कहा– पापा, ये टी.वी. के आगे आप बैट लेकर क्यों खड़े हो।

व्यक्ति ने कहा– बेटा, इस समय इण्डिया की बहुत खराब हालत है, ना जाने कब जरूरत पड़ जाए।

★ ★ ★ ★ ★ ★

सोनू : (पापा से) पापा, अगर आप को पता चले कि मैं क्लास में फर्स्ट आया हूँ तो आप क्या करोगे?

पापा : अरे बेटा मैं तुझे एक नई साइकिल दिला दूंगा।

सोनू : पापा मैंने आपके पैसे बचा दिये। मैं फेल हो गया हूँ। अब साइकिल लेने की जरूरत नहीं है।

– शोभिता (सतना)

★ ★ ★ ★ ★ ★

वर्ग पहेली के उत्तर

	1 स	त्य	2 भा	मा	
3 पाँ	च		र		4 मू
च		5 श्रु	त	6 की	र्ति
	7 ता			नि	
8 जू	न		9 आ	या	त
	10 से	वि	का		
11 स्पे	न		12 श	त्रु	ध्न

बाल कविता : प्रियंका भारद्वाज

तारों का राजा

तारों का राजा कहलाता सूरज,
दिन में भी तभी नजर आता सूरज।

पशु–पक्षी, पेड़–पौधे और इन्सान,
नींद से सभी को जगाता सूरज।

अन्धेरे को दूर भगाता हर दिन,
जीत का झण्डा फहराता सूरज।

गर्मी में गुस्से से गुर्राता है,
सर्दी में प्रेम से मुस्काता सूरज।

धरती का मन बहलाने को,
चंदा को चमकाता सूरज।

धरती तक आठ मिनट में ही,
देखो, प्रकाश पहुँचाता सूरज।

बाल कविता : हरजीत निषाद

हरियाली का मौसम आया

धूम मचाता अंधड़ आया।
धूल उड़ी अंधियारा छाया।
पीछे काला बादल आया।
जल बरसाया रंग जमाया।

जम के हुई झमाझम बारिश।
गर्मी भागी हुई न वापिस।
ठंडी हवा के झोंके आये।
मिटी घमोरी रही न खारिश।

गलियों में पानी भर आया।
बच्चों का हृदय हर्षाया।
उफन पड़े नदियां और नाले।
हरियाली का मौसम आया।

कविता : डॉ. परशुराम शुक्ल

प्यारा भारत

हम भारत माँ के प्यारे हैं,
भारत हमको प्यारा है।
शीश कटाये हैं सीमा पर,
माँ ने अगर पुकारा है।।

इसके पर्वत झरने प्यारे,
इसकी नदियां प्यारी हैं।
इसकी धरती स्वर्ण उगलती,
इसकी आभा न्यारी है।।

सत्य, अहिंसा, मानवता को,
धर्म बनाया भारत ने।
उन्नति पथ पर बढ़ते जाना,
कर्म बनाया भारत ने।।

भारत के सब भारतवासी,
अमन चैन के रखवाले हैं।
किन्तु समय आ पड़े कठिन तो,
शूरवीर हिम्मत वाले हैं।।

जून अंक रंग भरो के श्रेष्ठ चित्र

1

मोहित 13 वर्ष
एच.पी. पी.डब्ल्यू.डी. क्वार्टर नं. 1,
फेस–1, गवर्नमेंट कालोनी,
रिकांग पिओ, जिला : किन्नौर (हि.प्र.)

2

हर्ष मंगा 11 वर्ष
मं. नं. 34, वार्ड नं. 1,
मण्डी डबवाली,
जिला : सिरसा (हरियाणा)

3

दिव्य कोहली 15 वर्ष
सन्त निरंकारी सत्संग भवन के पास,
मराण्डा, जिला : काँगड़ा (हि.प्र.)

4

सिमरन कोहली 14 वर्ष
सन्त निरंकारी सत्संग भवन के पास,
मराण्डा, जिला : काँगड़ा (हि.प्र)

5

सुहावनी 11 वर्ष
प्लॉट नं. 802, डी.डी.ए. फ्लैट,
मोतिया खान, पहाड़गंज (दिल्ली)

इनके अतिरिक्त जिनकी प्रविष्टियों को पसंद किया गया वे हैं–

गीताजंलि (ग्रीन एवेन्यू, मुक्तसर),
महक (हरजिन्दर नगर, कानपुर),
प्रियंका, सोमजानी, मीत,
नंदिनी, विश्वनी (गोधरा),
तुषार (नेजाडेला कलां, सिरसा),
अब्बू (मराण्डा, काँगड़ा),
सुहानी (स्वर्ग आश्रम कॉलोनी, दिल्ली),
नीरज (डिगबोई),
सिमरन (भादला नीचा),
महक सोनी (झाकड़ी),
अंकित (कसोटी, काँगड़ा),
मोहित (जेवल, जम्मू),
अंजलि (पंडितवाड़ी),
सिमरन (ज्वालामुखी),
वंश कुमार (बडेरी),
प्रतिभा यादव (कृष्णा कॉलोनी, गुरुग्राम),
प्रेम प्रकाश (सरदार शहर),
विधिता (रामपुर, सहारनपुर),
सौम्य (अरनिया, वैशाली),
रुद्रांश (सोरगढ़), अमृता (सरायरैचन्द),
आदर्श राज (मराछी),
यशमीन (सिविल लाइन, श्रीगंगानगर)।

अगस्त अंक रंग भरो

सामने के पृष्ठ पर एक चित्र दिया गया है। इस चित्र में सुन्दर–सुन्दर रंग भरकर 20 अगस्त तक कार्यालय 'हँसती दुनिया', निरंकारी कॉम्प्लेक्स, निरंकारी सरोवर के पास, निरंकारी कालोनी, दिल्ली–110009 को भेज दें।

पांच श्रेष्ठ चित्रों के प्रतिभागियों के नाम (पते सहित) अक्टूबर अंक में प्रकाशित किये जाएंगे। चित्र के नीचे दिये गये रिक्त स्थान पर अपना नाम और पता अवश्य भरें।

15 वर्ष तक के बच्चे ही रंग भर कर भेज सकते हैं।

रंग भरो

नाम ..... आयु .....

पुत्र/पुत्री .....

पूरा पता .....

.....

.....पिन कोड .....

आपके पत्र मिले

हँसती दुनिया का जून अंक देखने व पढ़ने को मिला। इसमें प्रकाशित हर कहानियां कविताएं, लेख एवं स्तम्भ प्रेरणादायक व ज्ञानवर्द्धक लगे। किसी एक रचना की प्रशंसा करना अन्य रचनाओं व उनके लेखकों के साथ अन्याय करना होगा। वास्तव में यह पत्रिका संकलन योग्य है। चित्रकथाएं भी प्रेरणादायक लगीं।

पत्रिका वास्तव में सराहनीय है। सम्पादक मण्डल ने जिस मेहनत के साथ पत्रिका का प्रकाशन किया है वह वास्तव में काबिले–तारीफ है।

हँसती दुनिया न केवल बच्चों की बल्कि युवावर्ग का भी प्रतिनिधित्व एवं मार्गदर्शन करती है।

– सुनील कुमार (मेड़तासिटी)

हँसती दुनिया का नया रूप बेहद पसन्द आता है। दिन–प्रतिदिन यह पत्रिका बहुत आकर्षक होती जा रही है।

मई अंक में 'सबसे पहले' में 'प्रदूषण से मुक्ति सम्भव' में बहुत अच्छी तरह हमें समझाया गया है कि कैसे हम अपने जीवन को प्रदूषण मुक्त करके सुन्दर बना सकते हैं। प्रेरक–प्रसंग 'ज्ञान की गंगा' एवं 'खीरा गुणों में हीरा' लेख ज्ञानवर्द्धक हैं। स्तम्भ भी लगातार बढ़ते जा रहे हैं। यह पत्रिका ज्यादा से ज्यादा तरक्की करे। यही प्रभु से प्रार्थना है।

– अमिता मोहन (भटिण्डा)

यह राखी फूलों जैसी है

यह राखी तारों जैसी है,
यह राखी फूलों जैसी है।
आज यह राखी भाई बहन की,
मुस्कानों जैसी है।

आज के दिन भाई बहन,
एक दूजे के पास होंगे।
राखी का त्योहार मनाने,
एक दूजे के साथ होंगे।

आज के दिन खुश होकर भाई,
बहन को गले लगाएगा।
देकर प्यार भरा उपहार,
बहन को खुश कर जाएगा।

आज के दिन भाई की कलाई,
राखी से भर जाए।
राखी का त्योहार यह,
भाई बहन को मिलवाए।

प्रस्तुति : बद्रीप्रसाद वर्मा अनजान

kids Nirankari
spiritual dreamland for kids

Spiritual Zone for kids

With the blessings of His Holiness Experience online spiritual learning with exciting and fun features highlights our mission's message. Visit regularly to watch tiny tots excelling in the spiritual journey.

kids.nirankari.org

- His Holiness Message
- Glimpse of Blessing
- Message in colors
- Poetry Fantasy
- Wacky and True
- Fun Games
- Hansti Duniya
- Kids Creation
- Kids Activities
- Jokes
- Avtar Vani
- Story Time

Share your talent in form of painting, poetry & story

Registered with the Registrar of Newspaper For India Under RNI No. 25672/73 : Delhi Postal Regd. No. DL-(N)-01/0136/2015-17
: Licence No. U (DN)-23/2015-17
: Licenced to post without Pre-payment

निरंकारी पत्र-पत्रिकाएं पढ़ें और पढ़ाएं!

हँसती दुनिया (चार भाषाओं में) **सन्त निरंकारी** (ग्यारह भाषाओं में) **एक नज़र** (तीन भाषाओं में)

'सन्त निरंकारी', 'हँसती दुनिया' (हिन्दी, पंजाबी व अंग्रेजी) एवं 'एक नज़र' (हिन्दी/पंजाबी) की सदस्यता के लिए सम्पर्क करें

पत्रिका विभाग, निरंकारी कॉम्प्लेक्स, निरंकारी सरोवर के पास, निरंकारी कालोनी, दिल्ली-110009

011–47660200, E-mail : patrika@nirankari.org

सन्त निरंकारी, हँसती दुनिया, एक नज़र (मराठी) व सन्त निरंकारी (नेपाली) की सदस्यता के लिए सम्पर्क करें

Sant Nirankari Satsang Bhawan

1st Floor, 50, Morbag Road, Naigaon, Dadar (E) MUMBAI - 400 014 (Mah.)

e-mail : chandunirankari@yahoo.com & marathi@nirankari.org

अन्य भाषाओं की पत्रिकाओं की सदस्यता के लिए निम्नानुसार सम्पर्क करें

TAMIL

Sant Nirankari Satsang Bhawan,
#7, Govindan Street,
Ayavoo Naidu Colony, Aminji Karai,
CHENNAI-600 029 (T.N.)
Ph. 044-23740830

ORIYA

Sant Nirankari Satsang Bhawan,
Kazidiha, Post : Madhupatna,
CUTTACK-753 010 (Orissa)
Ph. 0671-2341250

TELUGU

Sant Nirankari Satsang Bhawan,
No. 6-2-970, Khairtabad,
HYDERABAD- Pin : 500 029 (TS)
Ph. 040-23317679

GUJRATI

Sant Nirankari Satsang Bhawan,
31, Pratapganj,
VADODARA-390022 (Guj.)
Ph. 0265-2750068

KANNADA

Sant Nirankari Satsang Bhawan,
88, Rattanvillas Road, Southend Circle,
Basavangudi, BENGALURU-560 023 (Karnataka)
Ph. 080-26577212

BANGLA

Sant Nirankari Satsang Bhawan,
1-D, Nazar Ali Lane, Near Beck Bagan,
KOLKATA-700 019
Ph. 033-22871658

पत्र-पत्रिकाओं के प्रसार अभियान में योगदान देकर सद्गुरु माता जी के आशीर्वाद के पात्र बनें

Posted at NDPSO, Prescribed dates 21th & 22nd. Date of Publication: 16th & 17th (Advance Month)